

THE RECORD NEWS

THE JOURNAL OF THE SOCIETY OF INDIAN RECORD COLLECTORS

ISSN 0971-7942

THE
SOCIETY
OF
INDIAN
RECORD
COLLECTORS

207 PARASHARA
T.I.F.R HSG.CNY
HOMI BHABA RD.
NAVY NAGAR
MUMBAI, INDIA
400 005

Volume

No.23

July 1996

MUMBAI

PUNE

GOA

NANDED

SOLAPUR

TULJAPUR

FEATURE ARTICLE IN THIS ISSUE



INAYAT KHAN

THE COMPLETE
RECORDINGS
OF 1909

THE SOCIETY OF INDIAN RECORD COLLECTORS

MANAGING COMMITTEE

PRESIDENT NARAYAN MULANI
HON. SECRETARY SURESH CHANDVANKAR
HON. TREASURER KRISHNARAJ MERCHANT

JOURNAL EDITOR; SURESH CHANDVANKAR

HONORARY MEMBERS

V.A.K. RANGA RAO, Madras
HARMANDIR SINGH HAMRAZ, Kanpur

Membership Fee: [Inclusive of the Journal Subscription]

Annual Membership Rs. 200/
Overseas Rs. 600/ [US \$20]

LIFE MEMBERSHIP Rs. 2000
OVERSEAS Rs. 6000/ [US \$200]

Annual term - - July to June

SOCIETY OF INDIAN RECORD COLLECTORS (ESTABLISHED 1990)

MEMBERS JOINING ANYTIME DURING THE YEAR (JULY - JUNE) PAY THE FULL MEMBERSHIP FEE AND RECEIVE THE BACK ISSUES FOR THE YEAR OF:

THE RECORD NEWS

FOR THE YEAR IN WHICH THEY JOIN

***[LIFE MEMBERS ARE ENTITLED TO ALL OF THE BACK ISSUES
- POSTAGE EXTRA] ALL RIGHTS RESERVED***

NOTE: ALL ARTICLES ARE COPYRIGHT © AND MAY ONLY BE REPRODUCED AFTER OBTAINING WRITTEN PERMISSION FROM BOTH THE JOURNAL EDITOR AND THE AUTHOR OF THE ARTICLE CONCERNED.

CONTACT ADDRESS;

SOCIETY OF INDIAN RECORD COLLECTORS

c/o Suresh Chandvankar, Hon. Secretary.

***207 Parashara, TIFR Housing Colony, Navy Nagar,, Coloba,
MUMBAI, 400 005, INDIA, Tel. (R) 91 22 + 218 9726***

***FOR THE
PRESERVATION
AND
PROMOTION
OF
INDIAN
SOUND
RECORDINGS***

FROM THE EDITOR

The Record News (TRN) - 23 contains CD [Complete recordings of Inayat Khan R.Pathan] and cassette [Shakuntal Te Kulvadh] reviews. SIRC members Dr.Joep Bor and Mr.Prabhakar Datar were instrumental in the production of these two collector's items of historical importance. Mr.Michael Kinnear has done digital mastering and the discography of the Inayat Khan's 1908 recordings and the same is included in the booklet released along with this CD. Unfortunately this CD is not available in India even after two years of its publication.

This issue also contains reports of SIRC listening sessions from Mumbai,Solapur,and Tuljapur. These reports will give an idea of the collections and musical likings of the members and record collectors at these units of SIRC.

SURESH CHANDVANKAR
EDITOR

=====

CONTENTS -

SIRC NEWS FROM MUMBAI
BY - SURESH CHANDVANKAR.....5

CD REVIEW:INAYAT KHAN-THE COMPLETE RECORDINGS OF 1909
BY - SURESH CHANDVANKAR.....11

CASSETTE REVIEW -
" NATYA GEETGANGA:SHAKUNTAL TE KULVADHU [1880-1942] "
BY - SURESH CHANDVANKAR.....21

LETTERS TO THE EDITOR.....25

SIRC NEWS FROM SOLAPUR
BY - MR.JAYANT RALERASKAR.....27

SIRC NEWS FROM TULJAPUR
BY - MR.SUDHEER PESHWE.....32

THE RECORD COLLECTOR
MR.ANDRE' BRUNEL,PARIS,FRANCE.....35

CONTENTS OF THE BACK ISSUES.....37

=====

COVER:FROM THE BOOKLET PUBLISHED WITH THE CD ON INAYAT KHAN'S
COMPLETE RECORDINGS OF 1909.

=====

PLEASE RENEW YOUR MEMBERSHIP.
PLEASE SEND YOUR VALUABLE COMMENTS AND SUGGESTIONS ABOUT OUR
JOURNAL - 'THE RECORD NEWS' [TRN]



शुक्ल यांच्या जन्मदिनानिमित्ताने ध्वनिमुद्रिका ऐकण्याचा कार्यक्रम

मुंबई, बुधवार (प्रतिनिधी) - नाटककार, कथा - कादंबरीकार व मुख्यत्वे कवी - गीतकार म्हणून भारतात असलेल्या स्व. स. अ. शुक्ल यांच्या ७६ व्या जन्मदिनानिमित्त 'सोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स'ने त्यांच्या ध्वनिमुद्रिकांचा एक खास कार्यक्रम रविवार, २६ मे रोजी सायंकाळी पाच वाजता गिरगावातील साहित्य संघ मंदिराच्या पुरंदरे सभागृहात आयोजिला आहे.

शुक्ल यांची रमला कुठे ग काव्या, वृंदावनी जाऊ या, चल रानात साजण, त्रिजलाला गडे, देव कुठे गुंतला, आनंद विश्व रंगले वगैरे अनेक पदे महाराष्ट्रमर लोकप्रिय झाली होती. एच. एम. बी. च्या जी. एन. जोशी व रुपजी शेट यांनी त्यांना ध्वनिमुद्रिकांच्या विश्वात ओढून नेले. त्यांनी त्यांचे शीघ्रकवित्व पाहून, त्यांच्याकडून शेकडो गाणी लिहून घेतली. मराठ्याची मुलगी, संत लुळशीदास, गजामाऊ, रामशास्त्री अशा अनेक चित्रपटांसाठीही शुक्ल यांनी गीतलेखन केले. शुक्ल कवींनी लिहिलेली भावगीते, नाट्यपदे व चित्रपटगीते यांना स्वराकार देणाऱ्यांत सर्वाई गंधर्व, मा. कृष्णराव, विष्णुपंत पागनीस, बाई सुंदराबाई, शांता आपटे, विनोदिनी दीक्षित, लीला लिमये अशा अनेकांचा समावेश होतो.

सोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स : सदाशिव अनंत शुक्ल यांच्या जन्मदिनानिमित्त त्यांच्या पाचशेहून अधिक गाण्यांपैकी निवडक गावलेल्या गाण्यांच्या ध्वनिमुद्रिका ऐकण्याचा कार्यक्रम, साहित्य संघ मंदिर, पुरंदरे सभागृह, गिरगाव, सा. ५.००

Society of Indian Record Collectors: Listening of 'Records of Bal-Gandharva', Dhuru Hall, Dadar Sarvajanic Vachanala, Chhabildas Road, Dadar (west), 4.30 p.m.

(एक ताळ)। 'सुन रे मोरी दाता' एव 'आज मोगी नचा' अशी बंदीही उनके गायन से प्राप्तान हुई है। ये वाणपूर्ण प्रस्तुतिया है। दूरी और राग गणुधी में 'ए मनोमोहन श्याम' (विनिवित्त-एक ताळ), 'श्याम मोरे मंदिर' (मय एकताल) एवं तारना (लीन ताळ) के प्रस्तुति सरस मानी जाणी तबले पर शुद्धरस देव ने, शरभोनिधय पर अमृत राणे ने सारत की है।

विमिल्ला खां



पद्मविभूषण उस्ताद विमिल्ला खां ने हाल में कहा कि अल्ता से मेरी यही अर्ज है कि सब्जा सुर है, सुर ही ईश्वर है। पवन नारी बारणासी निवासी इस कलाकार ने शनवाई को बड़ी खुशी पर पहुंचाया है, चाहे वह रागवादी संगीत हो या लोकसंगीत। नौसल की ओर से हाल में निकली उनकी क्रेडिट (नं. ०३१) में उस्ताद विमिल्ला खां व शब्द, साहित्य की प्रेम, सगाई, अटलियाँ, नागत, शुभविचार एवं विदाई विषय गीत है। यहाँ स्वर का सौंदर्य, भावपूर्णता है, युवती की आंतरिक भावनाओं का उदक है, विवाह का आनंद है, विदाई के फसलक्ष्य को ले विछोह आदि 'मौलस्य' है। संतकर है नवियन हुसैन (सबला), तथा नयन हुसैन, मुस्ताज हुसैन एव जमीन हुसैन (सभी शनवाई)।

मदनलाल व्यास

उस्ताद विमिल्ला खां के सवा सुर है, सुर ही ईश्वर है। पवन नारी बारणासी निवासी इस कलाकार ने शनवाई को बड़ी खुशी पर पहुंचाया है, चाहे वह रागवादी संगीत हो या लोकसंगीत। नौसल की ओर से हाल में निकली उनकी क्रेडिट (नं. ०३१) में उस्ताद विमिल्ला खां व शब्द, साहित्य की प्रेम, सगाई, अटलियाँ, नागत, शुभविचार एवं विदाई विषय गीत है। यहाँ स्वर का सौंदर्य, भावपूर्णता है, युवती की आंतरिक भावनाओं का उदक है, विवाह का आनंद है, विदाई के फसलक्ष्य को ले विछोह आदि 'मौलस्य' है। संतकर है नवियन हुसैन (सबला), तथा नयन हुसैन, मुस्ताज हुसैन एव जमीन हुसैन (सभी शनवाई)।

शुक्ल यांची रमला कुठे ग काव्या, वृंदावनी जाऊ या, चल रानात साजण, त्रिजलाला गडे, देव कुठे गुंतला, आनंद विश्व रंगले वगैरे अनेक पदे महाराष्ट्रमर लोकप्रिय झाली होती. एच. एम. बी. च्या जी. एन. जोशी व रुपजी शेट यांनी त्यांना ध्वनिमुद्रिकांच्या विश्वात ओढून नेले. त्यांनी त्यांचे शीघ्रकवित्व पाहून, त्यांच्याकडून शेकडो गाणी लिहून घेतली. मराठ्याची मुलगी, संत लुळशीदास, गजामाऊ, रामशास्त्री अशा अनेक चित्रपटांसाठीही शुक्ल यांनी गीतलेखन केले. शुक्ल कवींनी लिहिलेली भावगीते, नाट्यपदे व चित्रपटगीते यांना स्वराकार देणाऱ्यांत सर्वाई गंधर्व, मा. कृष्णराव, विष्णुपंत पागनीस, बाई सुंदराबाई, शांता आपटे, विनोदिनी दीक्षित, लीला लिमये अशा अनेकांचा समावेश होतो.

विमिल्ला खां

पद्मविभूषण उस्ताद विमिल्ला खां ने हाल में कहा कि अल्ता से मेरी यही अर्ज है कि सब्जा सुर है, सुर ही ईश्वर है। पवन नारी बारणासी निवासी इस कलाकार ने शनवाई को बड़ी खुशी पर पहुंचाया है, चाहे वह रागवादी संगीत हो या लोकसंगीत। नौसल की ओर से हाल में निकली उनकी क्रेडिट (नं. ०३१) में उस्ताद विमिल्ला खां व शब्द, साहित्य की प्रेम, सगाई, अटलियाँ, नागत, शुभविचार एवं विदाई विषय गीत है। यहाँ स्वर का सौंदर्य, भावपूर्णता है, युवती की आंतरिक भावनाओं का उदक है, विवाह का आनंद है, विदाई के फसलक्ष्य को ले विछोह आदि 'मौलस्य' है। संतकर है नवियन हुसैन (सबला), तथा नयन हुसैन, मुस्ताज हुसैन एव जमीन हुसैन (सभी शनवाई)।

मदनलाल व्यास

उस्ताद विमिल्ला खां के सवा सुर है, सुर ही ईश्वर है। पवन नारी बारणासी निवासी इस कलाकार ने शनवाई को बड़ी खुशी पर पहुंचाया है, चाहे वह रागवादी संगीत हो या लोकसंगीत। नौसल की ओर से हाल में निकली उनकी क्रेडिट (नं. ०३१) में उस्ताद विमिल्ला खां व शब्द, साहित्य की प्रेम, सगाई, अटलियाँ, नागत, शुभविचार एवं विदाई विषय गीत है। यहाँ स्वर का सौंदर्य, भावपूर्णता है, युवती की आंतरिक भावनाओं का उदक है, विवाह का आनंद है, विदाई के फसलक्ष्य को ले विछोह आदि 'मौलस्य' है। संतकर है नवियन हुसैन (सबला), तथा नयन हुसैन, मुस्ताज हुसैन एव जमीन हुसैन (सभी शनवाई)।

सुफी इनायत खां का पठान संगीत

गीता जावेदकर



श्रीमती गीता जावेदकर गीत जावेदकर के गायन का अत्यंत प्रिय गायिका हैं। गीता ने श्री आर. सी. डुगल, श्री पद्मवती मृगेश, श्रीमती पद्मवती शशिप्रियाम और व. रत्नाकर ध. से शिक्षा पायी। उन्होंने देश के विभिन्न अंचलों तथा विदेशों में अपने संगीत से रसिक श्रोताओं को प्रभावित किया है। गीता की आवाज में नैसर्गिक सौंदर्य एवं गीतता है। शिक्षा मार्गदर्शन तथा निष्कण प्रेम से किया है।

शुक्ल यांची रमला कुठे ग काव्या, वृंदावनी जाऊ या, चल रानात साजण, त्रिजलाला गडे, देव कुठे गुंतला, आनंद विश्व रंगले वगैरे अनेक पदे महाराष्ट्रमर लोकप्रिय झाली होती. एच. एम. बी. च्या जी. एन. जोशी व रुपजी शेट यांनी त्यांना ध्वनिमुद्रिकांच्या विश्वात ओढून नेले. त्यांनी त्यांचे शीघ्रकवित्व पाहून, त्यांच्याकडून शेकडो गाणी लिहून घेतली. मराठ्याची मुलगी, संत लुळशीदास, गजामाऊ, रामशास्त्री अशा अनेक चित्रपटांसाठीही शुक्ल यांनी गीतलेखन केले. शुक्ल कवींनी लिहिलेली भावगीते, नाट्यपदे व चित्रपटगीते यांना स्वराकार देणाऱ्यांत सर्वाई गंधर्व, मा. कृष्णराव, विष्णुपंत पागनीस, बाई सुंदराबाई, शांता आपटे, विनोदिनी दीक्षित, लीला लिमये अशा अनेकांचा समावेश होतो.

गीता जावेदकर

श्रीमती गीता जावेदकर गीत जावेदकर के गायन का अत्यंत प्रिय गायिका हैं। गीता ने श्री आर. सी. डुगल, श्री पद्मवती मृगेश, श्रीमती पद्मवती शशिप्रियाम और व. रत्नाकर ध. से शिक्षा पायी। उन्होंने देश के विभिन्न अंचलों तथा विदेशों में अपने संगीत से रसिक श्रोताओं को प्रभावित किया है। गीता की आवाज में नैसर्गिक सौंदर्य एवं गीतता है। शिक्षा मार्गदर्शन तथा निष्कण प्रेम से किया है।

गीता जावेदकर

श्रीमती गीता जावेदकर गीत जावेदकर के गायन का अत्यंत प्रिय गायिका हैं। गीता ने श्री आर. सी. डुगल, श्री पद्मवती मृगेश, श्रीमती पद्मवती शशिप्रियाम और व. रत्नाकर ध. से शिक्षा पायी। उन्होंने देश के विभिन्न अंचलों तथा विदेशों में अपने संगीत से रसिक श्रोताओं को प्रभावित किया है। गीता की आवाज में नैसर्गिक सौंदर्य एवं गीतता है। शिक्षा मार्गदर्शन तथा निष्कण प्रेम से किया है।

शुक्ल यांची रमला कुठे ग काव्या, वृंदावनी जाऊ या, चल रानात साजण, त्रिजलाला गडे, देव कुठे गुंतला, आनंद विश्व रंगले वगैरे अनेक पदे महाराष्ट्रमर लोकप्रिय झाली होती. एच. एम. बी. च्या जी. एन. जोशी व रुपजी शेट यांनी त्यांना ध्वनिमुद्रिकांच्या विश्वात ओढून नेले. त्यांनी त्यांचे शीघ्रकवित्व पाहून, त्यांच्याकडून शेकडो गाणी लिहून घेतली. मराठ्याची मुलगी, संत लुळशीदास, गजामाऊ, रामशास्त्री अशा अनेक चित्रपटांसाठीही शुक्ल यांनी गीतलेखन केले. शुक्ल कवींनी लिहिलेली भावगीते, नाट्यपदे व चित्रपटगीते यांना स्वराकार देणाऱ्यांत सर्वाई गंधर्व, मा. कृष्णराव, विष्णुपंत पागनीस, बाई सुंदराबाई, शांता आपटे, विनोदिनी दीक्षित, लीला लिमये अशा अनेकांचा समावेश होतो.

गीता जावेदकर

श्रीमती गीता जावेदकर गीत जावेदकर के गायन का अत्यंत प्रिय गायिका हैं। गीता ने श्री आर. सी. डुगल, श्री पद्मवती मृगेश, श्रीमती पद्मवती शशिप्रियाम और व. रत्नाकर ध. से शिक्षा पायी। उन्होंने देश के विभिन्न अंचलों तथा विदेशों में अपने संगीत से रसिक श्रोताओं को प्रभावित किया है। गीता की आवाज में नैसर्गिक सौंदर्य एवं गीतता है। शिक्षा मार्गदर्शन तथा निष्कण प्रेम से किया है।

गीता जावेदकर

श्रीमती गीता जावेदकर गीत जावेदकर के गायन का अत्यंत प्रिय गायिका हैं। गीता ने श्री आर. सी. डुगल, श्री पद्मवती मृगेश, श्रीमती पद्मवती शशिप्रियाम और व. रत्नाकर ध. से शिक्षा पायी। उन्होंने देश के विभिन्न अंचलों तथा विदेशों में अपने संगीत से रसिक श्रोताओं को प्रभावित किया है। गीता की आवाज में नैसर्गिक सौंदर्य एवं गीतता है। शिक्षा मार्गदर्शन तथा निष्कण प्रेम से किया है।

बालगंधर्वांच्या दुर्मिळ ध्वनिमुद्रिकांचा कार्यक्रम मुंबई, बुधवार (प्रतिनिधी) - रांगमणीवशील शुभसिद्ध गायक व नटश्रेष्ठ बालगंधर्व यांच्या २६ जून या जन्मदिनाच्या निमित्ताने येथे राधिकाश्री, २३ जून रोजी, एक खास कार्यक्रम आयोजण्यात आला आहे. 'सोसायटी ऑफ रेकॉर्ड कलेक्टर्स'च्यावतीने सर्वश्री प्रभाकर दातार व राम पागे सादर करणार असलेल्या या कार्यक्रमात बालगंधर्व यांच्या दुर्मिळ ध्वनिमुद्रिका ऐकविण्यात येतील. दादर सार्वजनिक वाचनालयाच्या धुरु हॉलमध्ये दुपारी साडेचार वाजता हा कार्यक्रम होणार आहे.

दादर सार्वजनिक वाचनालय व सोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स - बालगंधर्व यांच्या जन्मदिनानिमित्त त्यांच्या दुर्मिळ ध्वनिमुद्रिका ऐकविण्याचा कार्यक्रम, दादर सार्वजनिक वाचनालय, धुरु हॉल, दुपारी ४.३० वा.



दादर सार्वजनिक वाचनालय व सोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स : 'बालगंधर्व - एक ध्वनिमुद्रित स्मरण' हा कार्यक्रम, धुरु सभागृह, छविलदास मार्ग, दादर, सा. ४.३० वा.

SIRC NEWS FROM MUMBAI

During the period of this report, we presented following listening sessions -

1] On May 26, 1996 Mr. Suresh Chandvankar presented a programme titled - 'Shukla Kavinchi Gani'. About 100 music lovers and family members of Late Mr. S.A. Shukla were present. They narrated several incidences of Mr. Shukla and expressed their deep appreciation for preparing and presenting this programme.

2] On June 8, 1996 a listening session in collaboration with NCPA (National Centre for Performing Arts), Mumbai was organised at their premises. The topic was - Recorded music of Inayat Khan R. Pathan. Several eminent musicians, scholars and critics attended this programme and liked it very much. Details of the songs played are given elsewhere.

3] On June 23, 1996 a programme based on the records of Bal Gandharva was presented by Mr. Ram Page and Mr. Prabhakar Datar at Dhuru Hall, Dadar and was well attended.

=====
Details of the songs played at the programme -

" Shukla Kavinchi Gani " in May 1996

SONG TITLE / SINGER / DRAMA, FILM (IF ANY)

- 1] Anande Vishwa Rangale - Shankarrao Sarnaik (From Marathi drama Satyagrahi)
- 2] Brijalala Gade - Heerabai Barodekar (From Marathi drama Sadhvi Meerabai)
- 3] Kuthe Guntala Deva - G.N. Joshi (From Marathi drama Satyagrahi)
- 4] Rangat Rangala, Chandat Dangala / Majhya Mamachya Ghari - Vasanti and Ram Marathe (From Marathi film - Saint Tulsidas, 1939)
- 5] Ram Vani Jai / Ramsakha Kuni dava / Vishnupant Pagnis / (From Marathi film - Saint Tulsidas, 1939)
- 6] Kashila Ga Janar / Gopal, Shyama and Ranoji / Ramshastri
- 7] Sangram Suru Bagha Jhala / Ughad Ughad Dole / Lata Mangeshkar / Gajabhau (1944)
- 8] Prabhu To Milel Kothe / Hari Vajvi Manjul Murli / Ameerbai Karnataki / Bhakticha Mala (1944)
- 9] Raja Pandharicha / Aamhi Duniyechhe Raje / Master Krishnarao / Bhakticha Mala (1944)
- 10] Jadugarini Sakhe Sajani / G.N. Joshi
- 11] Rakhiya Bandhao Bhaiyya / Ratnamala / Chhaya
- 12] Ramala Kuthe Ga Kanha / Leela Limaye
- 13] Madalasa Dhari Preeti Lalasa / Ramnath Mathkar
- 14] Bol Sakhya Madhu Bol / Sanjeevani Marathe
- 15] Sakhya Bol Mohana / R.N. Paradkar
- 16] Chal Sakhaye Jau Ya Ga / Shanta Apte
- 17] Daul Tujha Najuk Pyara / Suresh Haldankar
- 18] Chamkati Ya Vaya / D.V. Paluskar

NATIONAL CENTRE FOR THE PERFORMING ARTS

LISTENING SESSION
OF RECORDED MUSIC OF
INAYAT KHAN R. PATHAN

Inayat Khan attained worldwide fame as a Sufi mystic and founder of the Sufi Movement. However, he was also a great composer, singer and vina player, who was the first in the beginning of the century to draw serious attention from a western audience to Indian classical music. Also in his many books and lectures music is a recurring theme.

Claude Debussy referred to him as a remarkable 'musicien-philosophe', and Rabindranath Tagore had great respect for his extraordinary musical talent. Many other celebrities, in India and in the West, paid tribute to his music. Indeed, few of us were aware that Inayat Khan had recorded 31 classical songs in Calcutta before his departure to the West. And surprisingly, nowhere does he refer to this event in his biography. By courtesy of EMI Archives and the Gramophone Company of India, it is now possible to listen to the music of this learned man. For anyone accustomed to the subtleties of Indian music, philosophy and thought, Inayat Khan's double CD is a memorable treasure, a genuine collectors item, which will afford tremendous listening pleasure.

These recordings were recently discovered in the archives of EMI in London. The material is both musically and historically unique. The copies of the discs discovered were in mint condition. The existence of these records from 1909 was virtually forgotten, because in 1910 shortly after the recordings were made, Inayat Khan departed to the West to spread the Sufi message. In his own words: with the aim of bringing East and West together through music'. The recordings were made in September 1909 in Calcutta and were released on sixteen 78 rpm records in April 1910.

PROGRAMME

- | | |
|-----------------------|-------------------------------|
| 1. Raga POORVI | 9. Raga MAND |
| 2. Raga YAMAN KALYAN | 10. Raga PARAJ |
| 3. Raga BIHAG | 11. Raga BHAJAN |
| 4. Raga KAFI HORI | 12. Raga KHAMAJ DHRUPAD |
| 5. Raga SINDHURA HORI | 13. Raga JOGIA GAZAL |
| 6. Raga KAUNSI KANADA | 14. Raga Parsi Puppettee Song |
| 7. Raga MALKAUNS | 15. Raga BHAIRAVI |
| 8. Raga JAUNPURI TODI | 16. Raga SINDHU BHAIRAVI |

LITTLE THEATRE

Thursday, June 6, 1996 at 6.30 P.M.

- 19] Lope Timiri Dhruvtara / Basavraj
 20] Jadugiri Nayani Thor / J.L.Ranade
 21] Aasara Pasara / Heerabai Barodekar

=====

Details of the songs played at the programme -
 " Records of Bal Gandharva " in June 1996

SONG TITLE / DRAMA,FILM ETC./ Singer

- 1] Baghuni Upvana (Beka,1907) / Saubhadra / Bal Gandharva
 2] Saphale Chhati (Beka,1907) / Ramrajya Viyog / Bal Gandharva
 3] Bahut Parine Upadesh / Shapsambhram / Bal Gandharva
 4] Krishnaray Bharam / Telugu Recording of Raghuramaiyya
 5] Smar Tapyachya / Shapsambhram / Bal Gandharva
 6] Pushpa Parag (1909) / Saubhadra / Keshavrao Bhosle
 7] Pushpa Parag (1914) / Saubhadra / Bal Gandharva
 8] Piharava Tehari (1909) / Raga Yaman by Joharabai Aagrewali
 9] Ha Takmak Pahi / Raga Yaman from 'Manapman' / Bal Gandharva
 10] Swagat Bhashan / Manapman / Ganpatrao Bodas
 11] Chadhala Ravi Tapa / Vidyaharan (radio recording) / Bal Gandharva
 12] Mama Aatma Gamala / Swayamvar - organ tune / N.B.S.Mani
 13] Garjat Aaye / Sur Malhar / Gauhar Jan of Calcutta
 14] Anrutachi Gopala / Swayamvar / Surdasi Malhar / Bal Gandharva
 15] Nanadiya Mare Bol / Master Krishnarao
 16] Dil Bekarar Tune / Bai Sundarabai / Gazal
 17] Kahsi Ya Tyaju Padala / Ekach Pyala / Bal Gandharva
 18] Dahati Bahu Mana / Bal Gandharva
 19] Gokulman Chalo Re / Bal Gandharva
 20] Jamunake Teer / Hori / Bal Gandharva
 21] Han Hinval Jari Phar / Raga Khat (Draupadi) / Bal Gandharva
 22] Kan Sakal Jagi / Nandkumar / Bageshree / Bal Gandharva
 23] Priyakar Mama Bala / Bageshree / Goharbai
 24] Hi Samaj Tav Kutil Chaturai / Sadhwi Meerabai / Bal Gandharva
 25] Tamil Bhairvi recording of S.G.Kittappa
- =====



Mr. Bal Gandharva

२६ जून हा - बालगंधर्वांचा जन्मदिवस. १८८८-१९६७ या ऐंशी वर्षांच्या प्रदीर्घ कालखंडात मराठी संगीत रंगभूमीवर व रसिक मनावर त्यांनी अधिराज्य केले. आपल्या दीर्घ आयुष्यात ते एक दंतकथाच बनून राहिले होते. १८९८ साली वयाच्या दहाव्या वर्षी लोकमान्य टिळकांनी त्यांचं गाणं ऐकलं व 'बालगंधर्व' ही पदवी जाहीरपणे दिली अन् त्यांचं नाव नागयण श्रीपाद रजहंस असं होतं हे लोकांच्या स्मरणतून जायला लागलं.

बालगंधर्व इ. स. १९०५ मध्ये किलोस्कर मंडळीत दाखल झाले. ते १९४४ साली मराठी रंगभूमीच्या शतकमहोत्सवाचे अध्यक्ष होईतो ते कार्यरत होते. 'शाकुंतल', 'मानापमान', 'विद्याहरण', 'मूकनायक', 'संशयकल्लोळ', 'स्वयंवर', 'एकच प्याला' या नाटकांबरोबरच 'धर्मात्मा', 'साध्वी मीराबाई' या बोलपटातूनही त्यांनी भूमिका केल्या. अद्यापही त्यातली पदे/ गाणी रसिकांच्या गळ्यात व मनात ठाण मांडून बसलेली आहेत.

अगदी लहान वयात रंगभूमीवर आल्यामुळे अभिजात संगीताचं विधिवत व दीर्घकाळ चालेल असं शिक्षण त्यांना घेता आलं नाही. पण भास्करबुवा बखले, गोविंदराव टेंबे व इतर अनेकांनी जो संगीतसंस्कार त्यांच्यावर केला त्यामध्ये त्या काळातल्या ध्वनिमुद्रिकांचा वाटाही मोठाच होता. गौहरजान ऑफ कलकत्ता, मलका जान ऑफ आगर, जोहरबाई आग्नेवाली मजुद्दिन खान यांच्या ध्वनिमुद्रिका त्यांनी मनमुगद ऐकलेल्या होत्या.

ग्रामोफोन कंपनीत त्यांच्या दोनशेच्यावर गाण्यांच्या ध्वनिमुद्रिका बनवलेल्या आहेत. त्याची शास्त्रशुद्ध सूची (डिस्कोग्राफी) ही 'रोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स' या संस्थेने त्यांच्या एका अंकात प्रकाशित केलेली आहे. त्यांच्या अगदी पहिल्या ध्वनिमुद्रिका जानेवारी १९०७ मध्ये बेका कंपनीत बनविल्या होत्या. एका बाजूला मुद्रण व दुसरी बाजू पूर्ण सपाट, गुळगुळीत अशा या आठ इंच व दहा इंच व्यासाच्या ध्वनिमुद्रिका होत्या. या एकूण चौवीस ध्वनिमुद्रिका असून बेका रेकॉर्ड कंपनीच्या सेठ वल्लभदास रणछोडदास यांच्या पुढाकारानं बनलेल्या आहेत. 'शारदा', 'सौभद्र', 'शकुंतला', 'मूकनायक', 'रामराज्यवियोग' या नाटकातली पदं यात असली तरी भैरवी, मांड, जिन्हा कहरवा, गरबा, तुमरी जिला, या गुजरतीतून त्यांनी गायिलेल्या

रगदारीच्या चीजा व 'नका टकुनि जाऊ' ही मराठीतली भैरवी यात आढळते. या ध्वनिमुद्रिका एचएमव्हीच्या नसल्यानं पुन्हा कधीही वितरित होऊ शकल्या नाहीत. बालगंधर्वांचं अगदी सुरुवातीच्या काळातलं गाणं होतं तरी कसं याची झलक दाखविणाऱ्या या ध्वनिमुद्रिका आज बुजुर्ग संग्राहकांच्या संग्रहांमध्ये

काळातली लोकप्रियता जशी दिसते तसंच त्या काळातल्या या क्षेत्रातल्या असल्या उचापतीही पुढं येतात. आश्चर्य एका गोष्टीचं वाटतं की स्वतः नागयणराव किंवा अन्य कोणी अशा प्रकारच्या नामचौयाला कसलाच आक्षेप कसा घेतला नाही? बालगंधर्वांवरील उपलब्ध चरित्रे व चरित्रात्मक

बालगंधर्वांच्या ध्वनिमुद्रिका

• सुरेश चांदवणकर



निपचित पडून असून अखेरचे श्वास घेत आहेत.

पुढे १९११-१२ मध्ये सन डिस्क रेकॉर्ड कंपनीने त्यांच्या काही ध्वनिमुद्रिका मुंबई येथे प्रकाशित केल्या. यावर सोनेरी रंगाचे लेबल व काहीवर 'मेड इन जर्मनी' तर काहीवर 'मेड इन इंग्लंड' असं लिहिलेलं आढळतं. या रेकॉर्ड्सवरचा आवाज फार वेगळाचं वाटतो, असं बऱ्याच बुजुर्ग रसिक/संग्राहकांचं मत आहे. अगदी अलीकडेच या रेकॉर्डस बालगंधर्वांच्या नसून अनंत नागयण बडोदेकर यांनी BALGANDHARWA अशा टोपण नावानं सन् डिस्कला दिल्या होत्या असा पुरवा पुढं आला आहे. एकूण पंचेचाळीस गाणी या गृहस्थांनी दिली पण त्यातली जेमतेम १५/२० गाणीच विक्रीसाठी बाजारात आली. यावरून बालगंधर्वांची १९०५ ते १९१० या

कादंबऱ्यांमध्येही या गोष्टीचा उल्लेख आढळत नाही. ही आपली कळकळ, संशोधन परंपरा अन् व्यासंग।

१९१०-११ याच कालखंडात 'पंचे' या कंपनीत मुंबईतच काही ध्वनिमुद्रिका बनवल्या. त्यातील चारगंचा शोध संग्राहकांना लागला आहे. अकरा इंच व्यासाच्या या ध्वनिमुद्रिका टी. जे. थिओबाल्ड नॉबल यानं मुद्रित केल्या असून आतून बाहेर वाजत येणाऱ्या आहेत. या शंभर गतीच्या ध्वनिमुद्रिका Pathe मशीनवर त्यांच्याच खास सुईनं ऐकायला येतात. हा ठेवाही काळाच्या पोटात गडप होत आहे.

बालगंधर्वांचं बहुतांश ध्वनिमुद्रण हे ग्रामोफोन कंपनीनं १९१४ ते १९५१ इतक्या प्रदीर्घ काळ केलेलं आहे. अगदी सुरुवातीला झोनोफोन रेकॉर्डच्या हिरव्या वेष्टनावरच्या रेकॉर्ड्स आर्थर स्पॅरिसवुड व्लार्क यानं मुंबईत फोर्टमधील

स्टुडिओत केल्या. ही जवळजवळ वीस गाणी एचएमव्ही लेबलवरती कंपनीनं ऑगस्ट १९१९ मध्ये 'खास दिवाळीकरिता' म्हणून पुन्हा वितरित केली. १९१८ मध्ये जॉर्ज वॉल्टर डिलनट यानं आणखी वीस गाणी मुद्रित केली. ही सर्व गाणी 'स्वयंवर'मधली, दोन 'शापसंभ्रमा'तली तर एक 'संशय कल्लोळ'मधलं. या सर्व एच. एम. व्ही. लेबलवरती वितरित करण्यात आल्या. मार्च १९२० मध्ये डिलनटनं 'एकच प्याला'तली आठ तर 'मानापमान'तली दोन पदं मुद्रित केली. तर १९२५ ते १९२६ अखेर डग्लस काटंरनं 'रामराज्यवियोग', 'नंदकुमार', 'मृच्छकटिक', 'द्रौपदी' व 'विद्याहरण' तसेच 'आशानिरशा', 'संशयकल्लोळ' या नाटकातली पन्नासच्यावर पदे ध्वनिमुद्रित केली.यातल्या पंचवीसच्यावर गाण्यांचं मुद्रण सप्टेंबर १९२५ मध्ये सोलापूर मुक्कामी करण्यात आलं होतं. पण त्यातली एकही रेकॉर्ड संग्राहकांकडे सापडत नाही. कदाचित त्याच्या नमुना प्रती अजूनही कुणाकडे धूळ खात पडल्या असतील. १९२५/ १९२६ पर्यंतच ध्वनिमुद्रण अकौस्टिक (acoustic) पद्धतीनं केलं जात होतं. त्यात ग्रामोफोनच्या कर्ण्याचा मायफोशन म्हणून वापर घ्यायचा. पुढं कार्बन मायक्रोफोन्स, विजेवर चालणारी मोटर यांचे साह्याने इलेक्ट्रिक रेकॉर्डिंग सुरू झालं. या पद्धतीनं १९२६/ २७ मध्ये सुमारे सत्तर पदं मुद्रित करण्यात आली. ही पदं मुंबईतील आजच्या न्हिदम हाऊसच्या शेजारी व जहांगीर आर्ट गॅलरीसमोरच्या इमारतीत करण्यात आली. ही इमारत पुढे अशोककुमार हाऊस म्हणूनही ओळखली जात असे. कारण ती सिनेनट अशोककुमारने खरेदी केलेली होती. ही सत्तर गाणी 'मूकनायक', 'मेनका', 'मानापमान', 'एकच प्याला', 'द्रौपदी', 'नंदकुमार', 'सौभद्र', 'संशयकल्लोळ' इ. नाटकातली होती. तर काही हिंदी व गुजरती भजनं होती. यातली बरीचशी गाणी पुढं दि दिवन (The Twin), HMV वगैरे लेबलवरती १९३५ पर्यंत अनेक वेळा वितरित करण्यात आली. पण ग्रामोफोन कंपनी (HMV) करता १९२७ नंतर बालगंधर्वांनी ध्वनिमुद्रिका दिलेल्या नाहीत.

सात/ आठ वर्षांनी ओडियन कंपनीकरिता त्यांनी १९३४-३७ मध्ये वीसेक गाणी दिली. यात काही भजनं, 'अमृतसिद्धी', 'कान्होपात्रा', 'सावित्री' ही नाटकं तर साध्वी मीराबाई या (पान ४ पाहा)

(पान ३ वरून)

चित्रपटातली गाणी होती. ऑडियनवरची काही पदं नमुन्याकला मुद्रित केली होती व पुढे ती अत्रकाशितच राहिली. यातली काही पदं पुढे कोलांबिया लेबलवरती १९४२ मध्ये पुन्हा प्रकाशित करण्यात आली. १९५१ मध्ये कोलांबिया लेबलवरती 'विठ्ठल रघुनाई' या मराठी खोलपटातल्या तीन ध्वनिमुद्रिका बनविण्यात आल्या. याला संगीत सुधीर फडके यांचे व पाच गाणी बालगंधर्वांच्या लाबाजातली आहेत.

बालगंधर्वांची काही गाणी व ध्वनिमुद्रिका अजूनही संग्राहकांच्याही नजरेतून हुटली असण्याची शक्यता आहे. पुढे दीर्घकाळ राजगान्या ध्वनिमुद्रिका व ध्वनिफती आल्यावरती ग्रामोफोन कंपनीने यांपैकी काही निवडक ध्वनिमुद्रिका पुन्हा प्रकाशित

बालगंधर्वांच्या ध्वनिमुद्रिका

केल्या. १९६७ साली त्यांचे निधन झाल्यावर वर्षभरत 'नटसमाट बालगंधर्व' या नावाने एक लॉग प्लेईंग रेकॉर्ड निघाली. तिच्यात चार गाणी होती. १९८० साली INRECO ने 'धर्मात्मा'ची गाणी साइड्‌ट्रॅकवरून उतरवली. १९८७ मध्ये बालगंधर्वांच्या जन्मशताब्दीनिमित्ताने कंपनीने दोन एल. पी. रेकॉर्ड्सचा संच काढला. त्यात चौवीस गाणी तर १९८८ मध्ये भक्तिसंगीताच्या ध्वनिफतीत १४ गाणी म्हणजे एकूण चाळोपेकी पन्नासक गाणी

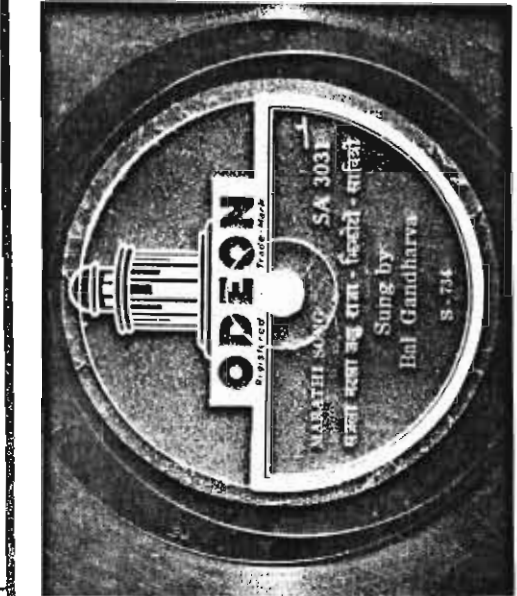
१९९० पर्यंत पुन्हा उपलब्ध होती. आता मात्र बाजारत यातले काहीच फास शिल्लक राहिलेले नाही. महागष्टाने व मराठी माणसाने बालगंधर्व व त्यांच्या गाण्यावर अतोनात प्रेम केले. त्यांच्या चाहत्यांमध्ये इतर भाषिकही- विशेषतः गुजराती समाज मोठ्या प्रमाणावर होते व आहेत. त्यांच्या जीवनकाळात व निधनांतरही त्यांचे जीवनचरित्र व गाण्यावर भरपूर लिहून आलेले आहे. त्यांच्याच हयातीत भूगंधर्व, सवाई, छेयट, कुमार, महागष्ट,

आनंद, गुणी, किंचित व डिट्टो गंधर्व होऊन गेलेले त्यांनी बघितले. त्यांच्या निधनांतर २६ जून १९६८ रोजी पुणे येथे बालगंधर्व रामरियरचे उद्‌घाटन झाले व मग महागष्टपर बालगंधर्व सभागृह, नाट्यमंदिर अनेक जागी उभारली गेली.

पुढच्या शतकांमध्ये त्यांची काही नावनिष्ठाणी शिल्लक रहावयाची असेल तर त्यात त्यांनी दिलेल्या ध्वनिमुद्रिकांचा फार मोठा उपयोग होणार आहे. शासन सामाजिक संस्था, ध्वनिमुद्रण कंपनी यांची उदासीनता अनाकलनीय व अक्षय्य आहे. त्यांच्याच आगोमो संगीत क्षेत्रात आपले नाव अजरामर करून गेलेल्या Enrico caruso ने गायिलेला प्रत्येक सूर व उच्चारलेला प्रत्येक शब्द आष पाश्चिमात्यांनी जाणीवपूर्वक कॉम्पॅक्ट डिस्क/ डिजिटल रेकॉर्डिंगच्या साहाय्येने जतन करून ठेवला आहे. तिथं हे अनेक प्रसिद्ध अप्रसिद्ध

कलावंतांविषयी सातत्याने चालू असते. ऐतिहासिक ध्वनिमुद्रण (Hisloric Recordings) असा स्वतंत्र प्रकारच तिथं आहे व तो माल खपतो की नाही याची ते फिकीर करत नाहीत.

'असा बालगंधर्व आता न होणे' असे ज्यांच्या गाण्याविषयी व अभिनयाविषयी आपण बोलतो त्यांचे सर्व ध्वनिमुद्रित गाणं, खाजगी मैफलीमधलं गणं, बोलपट इ. जे जे उपलब्ध आहे ते देशभरत जागोजागी संगीत विद्यालयांत, विद्यापीठांतल संगीतविभागांत, सार्वजनिक वाचनालयांतल 'श्रवणालय' विभागांमध्ये राखून ठेवणं अतिशय आवश्यक आहे. एकविसाव्या शतकातील रसिक, अभ्यासक, विद्यार्थी व संशोधकांना बालगंधर्वांची भेट याच माध्यमातून होणार आहे.





INAYAT KHAN

THE COMPLETE RECORDINGS OF 1909



31 classical Indian
songs from the
legendary
Sufi musician
Hazrat Inayat Khan

Prof. Inayat Khan R. Pathan (ca 1905)

2CD



INAYAT KHAN

THE COMPLETE RECORDINGS OF 1909

CD NF 1 50129-30 (Stereo)
Double CD Set
ADD
Made in England

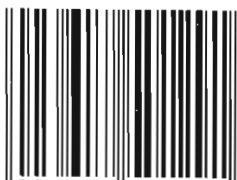
CD NO. 1 : CD NF 1 50129

1. PAHARI JHINJHOTI : Shad Raho Sarkar
2. SHAHANA : Main Dadar Kar Taar Par Aaun Vari
3. SHAHANA KHYAL : Chhab Dikhlay Lujhay
4. PURVI KHYAL : Kamli Wale Tope Sabkuchhvare
5. SURAT MALHAR : Raam Naam Bin Sukh Nahi Pare
6. KAFI : Kuchh Ajab Khel Hainge Is Pak Parvard
7. KAFI HORI : Hori Kelat Kanhaee
8. SINDHURA HORI : Mopai Baraiori Kar Rang Daro
9. QASIDA-I-MAQDUM (PERSIAN) : Dil
Band-e-Mehub-e-Khuda Shud Che Baja Shud
10. GHAZAL-I-ASSIF (PERSIAN) : Jab Uske Kamka
Na Mere Kamka Hai Dil
11. GHAZAL-I-NASEN (PERSIAN) : Tegdar Kafash
Didam Khun Man Bajosh Aadam
12. YAMAN KALYAN KHYAL : Piharva Tiharo
13. BIHAG TARANA : Dani Dar Dar Dem
14. KAUNSI KANADA TARANA : Tarana Dirna
15. MALKAUNS : Din Yahi Bite Jate Hai
16. JAUNPURI TODI : Kan Na Kar Mo So Rara

CD NO. 2 : CD NF 1 50130

1. MAND : Jaun Balihari Aavo Maara Nath
2. PARAJ : Tu Simar Naam Rab Ko
3. QASIDA-I-SHOHRAT : Vuh Muraj Gum
Karda Aashiyannah Ki Urke Ruy Chaman Na Dekha
4. GHAZAL-I-MOMIN (PERSIAN) : Naavak Aandaj
Jidhur Didya Janan Honge
5. BHAJAN-I-INAYAT : Karma Fakiri Fir Pappa Dilgiri
6. BHAIRAVI : Nand Ke Nand So Prit Kari
7. SINDHURA HORI : Tore Yiyamen Kapat Re Kandhaiya
8. KHAMMAJ DHRUPAD : Laag Hahi To So Lagan
9. YAMAN KALYAN : Yah Jo Surat Hai Teri Surat Jaanan
Hai Haha
10. SINDHU BHAIRAVI (PUNJABI) : Nain Non Diyan Nokan Vo
Buriyan Sindh
11. PILU BARVA : Pritam Pe Kurban Jaun
12. QASIDA-I-INAYAT : Sunile Suron Mein Kahe Hai Jamana
13. GHAZAL JOGIA : Nikab Jab Chehre Se Khurshid
Jab Uhay Hai.
14. PARSIS POPETTI SONG : Is Wakt Bahar Hai Sakiyen Man
Ek Daur Sharab Chalado Na (Part 1)
15. PARSIS POPETTI SONG : Is Wakt Bahar Hai Sakiyen Man
Ek Daur Sharab Chalado Na (Part 2)

Original Recordings taken by GEORGE WALTER DILLNUTT at CALCUTTA
on 26th and 28th September 1909, for The Gramophone Company of India. Ltd., Calcutta
Digital Transfers made for The Gramophone Co. of India Ltd., by Michael S. Kinnear in London, 1994.



5 026618 501291 >

© & © THE GRAMOPHONE CO. OF INDIA LTD.
THE GRAMOPHONE COMPANY OF INDIA LTD.
Calcutta, India

An associate member of the EMI Group of Companies
International leaders in music, electronics and leisure.



NEW CD RELEASED - Inayat Khan:Complete Recordings of 1909.

**Professor Inayat Khan R.Pathan (1882-1927)
(The Modern Tansen)**

In the musical world, the name Inayat Khan is associated with two well-known musicians viz. vocalist Inayat Hussain Khan (1849-1919) and the sitar and surbahar player Enayat Khan (1894-1938)-Sitarist Vilayat Khan's father. Musicians and music lovers have almost forgotten one more Inayat Khan who lived during 1882-1927 and that he recorded thirty-one songs for the gramophone company in 1909. These records were recently found in EMI archives at London by Mr. Michael S. Kinnear (Australia) and he transferred them digitally for EMI. Dr. Joep Bor (The Netherlands) did lot of research on Inayat Khan's biography and the music.

In 1994 an album containing two compact discs was released by EMI, England which gives the complete recordings of 1909 and the discography of recordings of Professor Inayat Khan R. Pathan. Even after two years this double CD set is not available in India. The booklet available with this set gives lot of information about Inayat Khan.

Professor Inayat Khan R. Pathan was a multifaceted personality. He was probably the first Indian musician to perform and lecture extensively in Europe and the USA. He was also one of the few Indian musicians born in the 19th century to write an autobiography.

Inayat Khan attained fame as a spiritual leader and founder of the western Sufi movement. In addition he was a gifted musician, composer, poet and writer. His mission was to bring 'East and West together through music' like his elder contemporary - Rabindranath Tagore who was trying to achieve the same through literature. Tagore had a great respect for Inayat Khan's musical talents and acquirements.

Inayat Khan was born on 5th July 1882 at Baroda in a family of musicians. His grandfather Maula Bakhsh (1833-1896) and father Rahmat Khan (1843-1910) were the court musicians at Baroda. Although his father was a renowned Dhrupad singer Inayat learnt music mainly from his grandfather. As a child he was restless and disliked school intensely. He began to write poetry at the age of eleven which worried his parents.

The death of Maula Bakhsh in 1896 was a serious blow to the young Inayat. He then toured with his father for one year to participate in the musical conference at Nepal. This long journey made a deep impression on him. He had an opportunity to listen to several great artists during this long tour and he also began to realize that the vain and powerful Maharajas thought that they knew more about music than they really did, and that music was just another form of entertainment for them. After returning to Baroda he began to learn harmonium



Inayat Khan playing the vina Hyderabad, ca 1907/1908



Inayat Khan playing the jaltarang.

References

- Anonymous
 1979 *Biography of Pir-o-Murshid Inayat Khan*. London and The Hague: East-West Publications.
 Coomaraswamy, A.K.
 1976 *The Dance of Shiva*. New Delhi: Sagar Publications.
 Day, C.R.
 1891 *The Music and Musical Instruments of Southern India and the Deccan*. London and New York: Novello.
 Deodhar, B.R.
 1993 *Pillars of Hindustani Music*. London: Sangam Books.
 Fox Strangways, A.H.
 1914 *The Music of Hindostan*. Oxford: Clarendon Press.
 Jong-Keesing, E. de
 1974 *Inayat Khan: A Biography*. The Hague and London: East-West Publications.
 Khan, I.
 1913 *Minqar-i-musiqar*. Allahabad: Indian Press.
 1988 *The Mysticism of Music, Sound and Word. The Sufi Message II*. Delhi: Motilal Banarsidass.
 1991 *The Sufi Message II. Revised edition: The Mysticism of Sound and Music*. London: Element Books.
 Khan, I. and J. Duncan Westbrook
 1919 *Hindustani Lyrics*. London: Sufi Publishing Society.
 Khan, M.M.
 1971 *Pages in the Life of a Sufi*. Farnham, Surrey: Sufi Publishing Co.
 Tagore, S.M.
 1965 *Hindu Music from Various Authors*. Varanasi: Chowkhamba.



The Royal Musicians of Hindustan.
 Left to right: Ali Khan (*dilruba*), Inayat Khan (*vina*),
 Musharrat Khan (*sitar*), Mahbub Khan (*taus*).

and violin under the guidance of his uncle Dr.A.M.Pathan who had come back from England. He was probably the first Indian to study western classical music at the Royal academy of Music in London. Young Inayat wrote instructional books for violin and harmonium under the guidance of his uncle. Inayat's first published book was 'Bala Sangitmala'. 'Inayat Git Ratnavali'(1903) contains seventy-five songs including ghazals,thumris,bhajans,khyals and even a few English songs.

After the death of his mother,Inayat left Baroda on a musical tour to Madras and Mysore sharing the stage with the great veena player Seshanna. Performing in Bombay he was dismayed by the unresponsive nature of the audience. In his biography he describes how shocked and depressed he was about the decadent state of music in this metropolis. In Bombay he met V.N.Bhatkhande and had some discussions with him.

From Bombay he then travelled to Hyderabad where he made friends with the well-known court photographer Lala Din Dayal and through him he was able to perform for the Nizam Mir Mahbub Ali Khan who was a good poet himself.[pen name:Asif]. The Nizam was deeply moved by the purity of Inayat's music and his total devotion to the art. He presented him with an emerald ring and a purse of gold coins and gave him the title "The Modern Tansen" which also appears on the label of his gramophone records.

In Hyderabad he also met his spiritual guru Murshid Madani. He became his disciple and began to train himself to serve God and humanity. He began to study Sufi literature with Maulana Hashmi. During this period he completed his main work on music - a book 'Minqar-i-Musiqar'. It was here that the struggle between his two vocations began. He was getting recognition as a performing artist,musical scholar and reformer and at the same time he was trying to free himself from the courts and society which gave him fame,honours and awards.

After the death of Murshid Madani in 1907 Inayat Khan set off for an extended musical tour through India - singing,playing Jaltarang and Veena and lecturing the theory of Indian music. He visited Mysore,Bangalore,Madras,Kumbhkonam,Nagpatam,Tanjore Trichinapalli,Madurai,Cochin,Travancore,Colombo (Ceylon) and Rangoon (Burma) and finally to Calcutta.

In Calcutta he recorded the songs for the Gramophone Company on 26 and 28 September 1909. The recordings were made subject to a contract concluded between Inayat Khan R.Pathan and the Gramophone Company Ltd.Calcutta. As per this contract he was required to make at least 36 records within three months. If required he was to make at least 24 records per contract year for the second and third year of the contract. However no further records were made by the company. All the 10 inch diameter and 78 rpm discs were issued in April 1910 as "GRAMOPHONE CONCERT RECORD" labelled discs. The records he made were "subject to a special artist's royalty" and "must on

no account be given foreign labels or fresh catalogue numbers", according to a letter from The Gramophone Company Ltd. (London, 14 April 1910). In other words, these records never appeared in the regular catalogues and were probably never played on the radio.

After finishing his tour in India Inayat Khan wanted to visit foreign countries. During the period 1910-14 his activities were centred around performing and lecturing on Indian music. It was also a period in Europe and the USA when the intellectuals and artists were attracted towards the Orient. Soon after his father's death Inayat Khan boarded the ship with his younger brother and cousin and went to New York. With a local tabla player Ramaswami they gave a performance at the Columbia University and joined the well-known dancer Ruth St. Denis whose performance of Radha in 1905 made her internationally famous. She produced many others shows based on the oriental themes but her association with Inayat ended soon. Although the lecture demonstrations at the university of California in Los Angeles and Berkeley were a great success, Inayat remarked [in his biography] that 'his music was put to a hard test in a foreign land, where it was as the old coins brought to a currency bank.' On the other hand the music was strange and at times almost amusing to Western ears.

From USA he travelled to England in 1912 where he met composers and critics like A.H. Fox Strangways [author of 'The Music of Hindostan (1914)] and they advised him to go to France. In France his group was known as the Royal Musicians of Hindustan and they also performed with the controversial dancer Mata Hari. In Paris they met several musicians and artists (Isadora Duncan, pianist Walter Rummel and Claude Debussy) who became very much interested in Indian music, ragas, arts and philosophy.

Inayat Khan and his group then went to Russia where they met the famous bass singer Fyodor Chaliapin and the composer-pianist Alexander Skrybin. Back in Paris in June 1914, he performed at the International Music Congress. He was also invited to perform in Germany but before he could make up his mind the disastrous war began and they had to pack up and go to England.

Thus the First World War caused the end of Inayat Khan's musical career and the beginning of the Sufi Movement. Gradually he gave up performing altogether. His music inspired him in his search for the divine truth. The next 16 years of his life were completely devoted to this task. It demanded on his time and energy that in the end he had to give up his music. He explained this in his own words as -

"I gave up my music because I had received from it all I had to receive. To serve God, one must sacrifice the dearest thing, and I sacrificed my music, the dearest thing to me. Now if I do anything, it is to tune souls instead of instruments; to

harmonize people instead of notes. If there is anything in my philosophy, it is the law of harmony; that one must put oneself in harmony with oneself and with others. I played the veena until my heart turned into this same instrument; then I offered this instrument to the divine musician, the only musician existing. Since then I have become his flute and when He chooses, He plays His music."

The Sufi movement today publishes Inayat Khan's teachings on all aspects of human life covering many subjects such as philosophy, psychology, religion and mysticism, as well as his lectures on their relationship with tone and rhythm, sound and music. In one of his lectures on music he said "Maybe one day the western world will awaken to India's music as now the West is awakening to the poetry of the East, and beginning to appreciate such works as those of Rabindranath Tagore. There will come a time when they will ask for music of that kind too."

One is not sure whether such time has come now, but the music on this CD album takes the listeners back in time. We boast and claim too much about our age old tradition in music and about our great musicians from past, but we really do not have any proof about their renderings. Fortunately due to sound recording we can at least listen to short pieces of some old masters of last century.

These are 78 rpm records playing for about three minutes. In these recordings Inayat Khan performs a wide range of ragas such as - Shahana, Jhinjhoti, Purvi, Surat Malhar, Kafi and Sindhura (Hori), Yaman Kalyan, Bihag Tarana, Kausi Kanada Tarana Malkauns, Jaunpuri Todi, Mand, Paraj, Khammaj Dhrupad, Pilu Barwa and Ghazal Jogia. He has also sung Persian Ghazals and Punjabi Sindhu Bhairvi and also Parsi Popetti Songs on this CD. Some of the songs are composed by him and one is composed by the Nizam of Hyderabad.

With these 31 songs of Inayat Khan a historical document has been produced. On the vast time scale how much of it will be relevant and how important it is can be judged only when we have an access to listen to it. Mr. Michael Kinnear and Dr. Joep Bor have together done this great work and thanks to them that we can get an idea about how Indian Classical music was sung in the first decade of this century.

- Suresh Chandvankar

Reference :



INAYAT KHAN
THE COMPLETE RECORDINGS OF 1909

CD NF 1 50129-30 (Stereo)
Double CD Set
- ADD
Made in England

CD NO. 1 : CD NF 1 50129

CD NO. 2 : CD NF 1 50130

इ नायत खान हे नाव घेतलं की संगीतक्षेत्रामध्ये दोनच असांमी प्राप्फुल्यांत डोळ्यापुढं येतात. एक इनायत हुसेन खान (१८४९-१९१९) गर्बई व दुसरे सतार व सूरसहारावादक इनायत खान. (१८९४-१९३८) म्हणजे विश्वाविख्यात सितारिये विलायतखींच वडील. या दोगां व्यतिरिक्त तिसरे एक इनायत खान होऊन गेले याचे आज सर्वांनाच विस्मरण झालेले आहे.

हे तिसरे इनायत खान म्हणजे प्रो. इनायतखान आर. पठाण (१८८२-१९२७). सामान्य रसिक सोडाब; पण जाणकार संगीतज्ञ, गायक, वादक व संगीतक्षेत्रातील अभ्यासकानाही त्याच्याविषयी फारशी माहिती नाही. ग्रामोफोन कंपनी करता १९०९ मध्ये त्यांनी एकतीस गाणी दिली होती व त्याच्या उत्तम तितीतल्या प्रती लंडन येथील कंपनीच्या ध्वनिमुद्रिका संग्रहालयात उपलब्ध आहेत याची एकाही भारतीयाला माहिती नाही. १९९४ मध्ये ही सर्व गाणी अत्याधुनिक तंत्राच्या साहाय्याने कॉम्पॅक्ट डिस्क व ध्वनिफितीवरती उतरवून, पुस्तिकेसकट प्रकाशित करण्यात आली आहेत, याची भारतीयाना अद्याप माहिती नाही.

प्रो. इनायत खान हे एक बुढंगी व्यक्तिमत्व होऊन गेले. संगीतकार, गायक व वादक, कवी, लेखक व सूफी संप्रदायातले संत अशी त्यांची अनेक रूपे या पुस्तिकेतून पुढं येतात. ते रविंद्रनाथ टागोरांचे समकालीन. टागोरांना त्यांच्या संगीताविषयी अतीव आदर होता. साहित्याच्या माध्यमातून पूर्व आणि पश्चिम यांचा संयोग टागोर घडवून आणत असताना, तसाच प्रयत्न संगीताच्या माध्यमातून इनायत खान करत होते. या प्रचंड कामाग्निमानं या शतकाच्या सुरुवातीला युरोप व अमेरिका खंडामध्ये दौरा करून संप्रयोग व्याख्याने देणारे बहुधा ते एकमेव भारतीय असावेत. एकोणिसाव्या

शतकात जन्माला येऊन आत्मघरित्र लिहून काढणारेही ते एकमेवच असावेत. अवघ्या बंधेनाळीस वर्षाच्या अल्पशा आयुष्यात संगीतक्षेत्रात ते आपला ठसा उमटवून गेले. आयुष्यातली शेवटची १५/१६ वर्षे अमीताकडे पूर्णपणे पाठ फिरवून त्यांनी सूफी शाब्दाच्या प्रचार व प्रसारणाच्या कामी स्वतःला बळून घेतलं व प्रथनिर्मिती केली. १९१३ साली मिनार-इ-मौसिकार (अलाहाबाद) तर १९१९ मध्ये हिंदुस्तानी लिरिक्स (लंडन) ही पुस्तके त्यांनी प्रकाशित केली. सूफी पंथ फ्रिचिमी देशांत रुजविण्याचे श्रेय

धुपदिये व अत्याधुनिक अभ्यासक्रमसाहित अद्यापन व्हांव यासाठीच्या चळवळीचे ते एक प्रमुख नेते होते. वडिलोपेक्षा आजोबांचा सहवास व संगीतसंस्कार छोट्या इनायतला अधिक लाभले. शाळा व तिथं मिळणाऱ्या शिक्षणापेक्षा संगीताकडे त्याचं मन अधिक ओढ घेई. बयाच्या अवघ्या अकराव्या वर्षीच कविता करू लागल्यात आईवडिलांना त्याची काळजीच वाटू लागली. संगीताच औपचारिक शिक्षण कुणाकडे झालं याची नोंद नसली. तरी सकाळी तो आजोबांबरोबर असे तर सायंकाळी गायनशाळेत जात असे, याचे

आधुनिक ताजस्तन

विस्मृतीत गेलेले गायक व वादक इनायतखान यांच्या दुर्मिळ ध्वनिमुद्रिका ऐकण्याची संधी 'सोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स तर्फे राष्ट्रीय संगीत नाट्य केंद्रात येत्या गुरुवारी संध्याकाळी साडेसहा वाजता मिळणार आहे. त्यानिमित्त...

इनायतखान याना जाते. आज जगभर फेकावलेल्या या पंथातील मंडळींना इनायतखान यांचं मानवी जीवन. तत्त्वज्ञान, मनसशास्त्र, धर्म व गूढवाद [mysticism] ख क्षेत्रांतले लेखन ठारूक आहे. आवाज,

उल्लेख चरित्रात आढळतात. १८९६ साली आजोबा मौलाबख वारले. त्यांना नेपाळनरेश भीम समरोरजंगहादूर यांच्याकडील संगीत परिषदेत आमंत्रित करण्यात आलं होतं. पण त्यांच्या ऐवजी मुलगा रहमतखानानं हुजेरी लावली. छोट्या इनायतला या वर्षभराच्या दोन्यामध्ये काठमाडूपर्यंत जाऊन वडिलांच्याबरोबर अनेक स्थळे पाहता आली. कितीतरी संगीत जलसे ऐकावयास मिळाले. गर्बिष्ठ, दिवाळखोर संस्थानिक व राजेमहाराजे संगीताकडे केवळ घटकामरवी करमणूक म्हणून कसं पाहता असत, हेही छोट्या इनायतला जवळून बघायला मिळालं.

इनायतखान यांचा जन्म ५ जुलै १८८२ रोजी झाला. त्यांचे वडील रहमत खान (१८४३-१९१०) व आजोबा मौला बख (१८३३-१८९६) हे दोघेही बडोदा संस्थानच्या सेवेत होते. वडील नावाजलेले

१८९७ च्या अखेरीस बापलेक बडोद्यास परतले, तेव्हा इनायतचे काका डॉ. ए. एम. पठाण रूर्फ अलाउद्दिन खान हे रीयल अर्कडनी ऑफ म्युझिक, लंडन या संस्थेतून पारश्चात्य शास्त्रीय संगीताचं शिक्षण घेऊन

परतले होते व बडोदा संस्थानात संगीत विभागाचे सुपरिटेण्डंट म्हणून रुजू झाले होते. त्यांच्याकडून हार्मोनियम व व्हायोलिन वादन शिकून घेऊन इनायतखान त्यावरली मार्गदर्शनावर पुस्तकंही लिहू लागले. आजोबांची स्वरलेखन पध्दती वापरून 'बालसंगीतमाला' हे पुस्तक लिहिलं; तर एकवीसाव्या वर्षी 'इनायत गीत रत्नावली' (१९०३) हे ७५ गीतांचं पुस्तक त्यांनी प्रकाशित केलं. यात गझल, कुमरी, भजन, ख्याल व काही इंग्रजी गीतसुद्धा आहेत.

आईच्या निधनानंतर १९०२ साली इनायतखान भारतभराच्या सांगीतिक दौऱ्यावर निघाले. मद्रास व म्हैसूर येथे वीणावादक शेषणासारख्या बुजुर्गांच्याबरोबरने मंच गाजवण्याची संधी त्यांना मिळाली. मुंबईत मात्र त्यांची व श्रोत्यांची/आयोजकांची तार जुळली नाही, असे दिसते. मुंबईहून इनायतखान दक्षिणेत हैदराबादला पोचले व तिथले त्याकाळचे विख्यात छायाचित्रकार लाला दीनदयाळ यांचे



इनायत खान

मित्र ज्ञाते. त्यांच्या ओळखीने निष्काम मीर महबूबखान यांच्या दरबारात गाणं केलं. निजाम स्वतः रसिकवृत्तीचे व कवी. त्यामुळे इनायतखान यांच्या गाण्यावर खुश होऊन 'आधुनिक तानसेन' ही पदवी बहाल करण्यात आली. 'याद रहो सरकार' ही पहाडी झिझोट्टी रागताली पहिलीच ध्वनिमुद्रिका 'निजाम जुबिली सौमि आहे; तर गझल इ-असिफ या ध्वनिमुद्रिकेतली गझल असिफ या टोपणनावाने खुद निजामानेच रचलेली आहे. याच मुक्कामात पुढे इनायतखान यांचे जीवन बदलून टाकणारी घटना घडली. आध्यात्मिक गुरू मुशिरिद मदानीशी गाठ पडली, तर मौलाना हाशिमिमुळे सूफी सांप्रदाय व साहित्याशी इनायतखानचा परिचय घडून आला. याच मुक्कामात 'मिनार इ-मीसिकार' या ग्रंथाची निर्मिती झाली. १९०७ साली मुशिरिद मदानीचे निधन झाल्यावर इनायतखानच्या मनात पंधराचारासाठी व संगीताच्या प्रात्यक्षिक/व्याख्यानाकरता परदेशी जाण्याचे येक लागले.

सप्टेंबर १९१० मध्ये वडिलांच्या निधनानंतर धाकटा भाऊ महबूबखान व पुतण्या अलीखान यांच्याबरोबर इनायतखान बीटीन न्यूयॉर्ककडे रवाना झाले. १९१० ते १४ या चार वर्षात संगीताचे कार्यक्रम व व्याख्याने अनेक ठिकाणी झाली. याच सुमारास युरोप व अमेरिकाखंडातील काही कलाकार व बुद्धिवंत/विचारवंत गैबोत्य संगीताकडे आकर्षिते जाऊ लागले होते. न्यूयॉर्कला पोहोचल्यावर कोलांबिया विद्यापीठात एक कार्यक्रम झाला व त्या काळातली विख्यात नर्तिका रुथ डेनिस मध्ये 'राधा' या नृत्याव्याहारा ती प्रसिद्ध पावलेली होती. पण या संचालने फारसे रमले नाहीत. पुढे लॉसएन्जलिस येथे, कॅलिफोर्निया विद्यापीठात व बर्केले येथे त्याचे यशस्वी कार्यक्रम झाले, पण इनायतखानच्या शब्दात

'आमचं संगीत फार कठीण परीक्षेस उतरलं होतं; पण एखाद जुनं नाणू बिकमध्ये बटवायला त्याच, अशी परिस्थिती होती.'

अमेरिकेहून १९१२ साली इनायतखान आपल्या सहकाऱ्यांबरोबर इंग्लंडला आले व सिरिल स्कॉट, पर्सी ट्रेजर व ए. एच. फॉक्स स्ट्रॅजवेल यांची गाठ पडली. त्यांच्या सल्ल्यावरून १९१३ मध्ये साळजण फ्रान्समध्ये परीस येथे आली तिथं भारतीय तत्त्वज्ञान व संगीत यांचेविषयी आपल्या असण्याच्या अनेक कलाकार तत्त्वज्ञांशी त्यांची गाठ पडली. त्यात इसाडोरा डॅकन, पियानोवादक वॉल्टेर रुमेल व क्लॉड डेब्युसी हे होते. 'हिंदोस्तानचे शाही संगीतकार' अशी इनायतखान यांच्या वचवूची ओळख करून दिली जात असे. त्यांच्या कार्यक्रमाच्या काही ध्वनिमुद्रिका बनवून विद्यापीठात ठेवाव्यात असा प्रस्ताव पुढे आला व जर्मनीहूनही बोलावणं आलं पण यातलं काहीच घडायचं नव्हतं. कारण पहिलं महायुद्ध सुरू झाला व गाथा गुडळून त्यांना तातडीनं इंग्लंडला जाव लागलं

पहिल्या महायुद्धाबरोबरच इनायतखान यांच्या संगीतिक कारकीर्दीची अखेर व सूफी चळवळीचा प्रचारक म्हणून सुरुवात झाली. ह्यूडू संगीत त्यांनी पूर्णपणे बंद केलं. एकदा याच कारण सांगताना ते म्हणाले, 'जग जर बहिर झालं नसतं तर कदाचित मी गाणं गात राहिलो असतो.' पुढे एका व्याख्यानात संगीताविषयी त्यांनी म्हटलं की, 'आज भारतीय काव्य व साहित्याकडे पाश्चिमात्य आकृष्ट होत आहेत. उद्या एक दिवस असा उगवलं की भारताच्या संगीताला पण पाश्चात्य जगतात मानाचे स्थान मिळेल.'

तो दिवस अजून उगवलाच किंवा नाही याविषयी वाद होईल, पण त्यांच्या स्वतःच्या शब्दात - 'संगीतापासून जे काही मिळवावयाचं होतं, ते मिळवून झालं असल्यामुळं मी संगीताची साथ सोडली.

परमेश्वराची सेवा करण्याकरता आपल्याला अत्यंत प्रिय गोष्टीचा त्याग करायचा बसतो. तो त्याग मी संगीताचा केलाय. आत्म-मी बाधाऐवजी आत्म जुळवण्याचे काम करतं; सुरांचा मिलाफ करायच्या ऐवजी माणसामाणसांत मिलाफ घडवून आणतो. मी धीणवादन इतकं केलं की माझे हृदयच जणू धीणमय होऊन गेलं व ती धीण मी स्वर्गीय संगीतकाराला (परमेश्वराला) अर्पण केली. तेव्हापासून मी त्याची बासरी झालोय व त्याला जेव्हा वाटेल तेव्हा तो माझ्यातून बोल काढतो.'

इनायतखान यांनी सूफी पंथाच्या चळवळीत व प्रसाराच्या कामी अखेरपर्यंत स्वतःला बांधून घेतलेलं होतं. तिथंही खुर्च मोठं नाव मिळवलं. आजही सूफी पंथाचे त्याच नाव आदरानं व आवजून घेतलं जातं. त्या मानानं संगीतकार इनायतखान विस्मरणात गेले असतानाच त्यांच्या गाण्याचे पुनरुज्जीवन होतंय. ऐतिहासिक ठेवा जतन करणं या दृष्टीने याला महत्त्व आहेच पण संगीतात समाधी अवस्थेत जाता येतं. असा त्याचा अनुभव होता. ते संगीत होतं तरी कसं याची झलक या तीनसाडेतीन मिनिटांच्या ध्वनिमुद्रिकामधून ऐकता येते. या शतकाच्या सुरुवातीस भारतीय अभिजात संगीत कसं सादर केलं जात होतं याचीही कल्पना ही गाणी ऐकताना येते.

यातल्या बऱ्याचशा ध्वनिमुद्रिका रागादारी संगीताच्या आहेत; व बऱ्याचशा चौजा / रचना स्वतः इनायतखान यांनी रचलेल्या आहेत. शहाणा, झिझोट्टी, पूरबी, सूरत मल्हार, काफी, सिंधूरी, चमन कल्याण, जौनपुरी तोडी, मांड, परज पित्तू बरखा यांचेबरोबर कौसी कानडा, बिहागमधील तराणा, गझल, पंजाबी व पर्शियन रचना तसेच पारसी पतंगी, सांगही त्यांनी मुद्रित केलेलं आहे. या सर्व रेकॉर्ड कॅल्संगीताच्या आहेत. बाद्यसंगीताची एकही नाही याचे आश्चर्य वाटते.



NATYA GEETGANGA

SHAKUNTAL TO KULAWADHU

Marathi Natya Sangeet (stage songs) is an invaluable cultural treasure of Maharashtra. "Jamasha", "Dashavatari plays", "Bharud", "Lalit" etc. art forms were prevalent in olden days. However, Late Vishnudas Bhave first introduced Marathi stage plays in the year 1843 at Sangli. Thereafter, this artform progressed for well over 150 years. Great drama authors like Balwant Pandurang Kirloskar, Govind Ballal Deval, Sripad Krishna Kolhatkar, Ram Ganesh Gadkari and Natyacharya Krishnaji Prabhakar Khadilkar and others have contributed immensely to the enrichment of this medium.

FICU takes great pride in presenting an unique 4MG album 'Natyageet Ganga', containing 65 songs from 40 popular stage dramas sung by equal number of most popular singers of yesteryears. 'Shakuntal to Kulawadhu' spans a period from 1880 to 1942, and hence this presentation is invaluable because some very rare songs and artists have been re-discovered from oblivion.

Another very attractive facet of this album is the research oriented synopsis and commentary by Shri Vidyadhar Gokhale a great writer and orator himself. There are few couplets written by Shri Gokhale which have been rendered by Madhuwanti Dandekar and Omkar Dadarkar.

The names of singers included in this album are; Keshavrao Bhosle, Savai Gandharva, Khan Sahab, Adulkarim Khan, Sripadrao Xeverekar, Master Dinanath, Anant Vernekar, Suhasini Mulgaonkar, Chota Gandharva, Yeshwant Lolekar, Bal Gandharva, Krishnarao Gore, Krishnarao Shende, Bapurao Pendharkar, Pramila Jadhav, Dattopant, Hirabai Barodekar, Suresh Haldankar, Meenaxi, Pandharpurkar Bua, Balkoba Bandekar, S. M. Londhe, Saraswati Rane, Walawalkar, Govind Mashelkar, Master Shantaram, Bapurao Ketkar, Shankar Rao Sarnaik, Nirmala Jadhav, Master Krishnarao, Master Damle, Pandit Rao Nagarkar, Prof. Vinayakrao Patwardhan, Prof. Suresh Babu Mane, Sauharbai Rajhans, Master Ram Marathe, Jyotsna Bhole, Master Bhargavram and Avinash.

The stage plays from where these songs have been taken are: Shakuntal, Saubhadra, Ramrajyaviyog, Mrichhakatik, Shap Sambhram, Sharada, Mook Nayak, Manapman, Manovijay, Vidya Haran, Saushay Kallol, Swayamvar, Punyaprabhav, Chitravanchana, Sanyasacha Saunsar, Bhau Bandhan, Ekach Pyala, Draupadi, Sattedhe Sulam, Patwardhan, Varvanchana, Soubhagyaxami, Shree, Menka, Ranadundubhi, Shikka Katyar, Tulsidas, Vidhi Likhit, Sadhvi Meerabai, Yugantar, Kanhopatra, Savitri, Amrut Siddhi, Udyacha Sounsar, Lagnachibedi, Andhilyachi Shala, Swayamsevak, Prem Sanyas and Kulawadhu.

There is no doubt that connoisseurs of music will cherish this musical treasure for all times to come.

नाट्य गीतगंगा

शाकुंतल ते कुलवधु

मराठी नाट्यसंगीत हे महाराष्ट्राचं एक अनन्य साधारण वैशिष्ट्य आहे. मराठी नाटकांची परंपरा फार जुनी आहे. पूर्वी तमाशे, दशावतारी खेळ, भारुड, ललित आदी प्रकार विद्यमान होतेच. पण कै. विष्णुदास भावे यांनी १८४३ साली सांगली येथे मराठी रंगभूमीची प्राण प्रतिष्ठा केली. त्यानंतर वर्षानुवर्षांची अखंड परंपरा या कला प्रकाराला लाभली. प्रतिभाशाली नाटकाकारांनी आणि कलाकारांनी महाराष्ट्राच्या या वैशिष्ट्यपूर्ण कला प्रकाराचं भव्य मंदिर आकारास आणलं. बलवंत पांडुरंग किर्लोस्कर, गोविंद बल्लाळ देवल, श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, राम गणेश गडकरी, नाट्याचार्य कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर आदिंनी संगीत नाटकांद्वारे नाट्यसंगीतास समृद्धी प्राप्त करून दिली. नाटक शाकुंतल ते कुलवधु (१८८० ते १९४२) म्हणजेच साठ वर्षांपेक्षा जास्त कालावधीतल्या चाळीस नाटकांतली एकूण पासष्ट पदे निरनिराळ्या चाळीस गायक गायिकांच्या आवाजात एच. एम. व्ही. (HMV) मोठ्या दिमाखानं एक ४ ध्वनिफीत संच, रसिकांसाठी सादर करित आहे. ह्यांतील कलाकारांची कोणे एके काळी सर्वत्र गाजलेली नाट्यगीतं म्हणजे एक अति दुर्मिळ खजिनाच म्हणावा लागेल. कांही पदे आणि कलाकार तर विरमूतीच्या गर्तेतून प्रथमतःच वर काढण्यात आले आहेत.

ह्या ध्वनिफीतीच आणखी एक आकर्षण आहे - श्री. विद्याधर गोखले यांचा निरूपण.

या ४ ध्वनिफीत संचात ज्या गायक गायिकांनी गायिलेल्या गीतांचा समावेश आहे त्यांची नावे अशी आहेत - केशवराव भोसले, सवाई गंधर्व, खाँ साहेब अब्दुल करीम खाँ, श्रीपादराव नेवरेकर, मा. दीनानाथ, अनंत वेणेकर, सुहारिनी मुळगावकर, छोटा गंधर्व, यशवंत लोलेकर, बाल गंधर्व, कृष्णराव गोरे, कृष्णाराव शेंडे, वापूराव पेंढारकर, प्रमिला जाधव, दत्तोपंत, हिराबाई चडोदेकर, सुरेश हळदणकर, मीनाक्षी, पंढरपूरकर बुआ, बाळकोबा बावडेकर, जी. एम. लोंढे, सरस्वती राणे, वालावलकर, गोविंद माशेलकर, मा. शांताराम, वापूराव केतकर, शंकरराव सरनाईक, निर्मला जाधव, मा. कृष्णराव, मा. दामले, पंडितराव नगरकर, प्रो. विनायकराव पटवर्धन, प्रो. सुरेश बाबू माने, गौहरबाई राजहंस, मा. राम मराठे, ज्योत्सना भोळे, मा. भागवतराम, अविनाश.

ज्या संगीत नाटकांतून पदांची निवड केलेली आहे त्यांची नावं आहेत: शाकुंतल, सौभद्र, रामराज्य वियोग, मृच्छकटिक, शापसंभ्रम, शास्दा, मूकनायक, मानापमान, मानोविजय, विद्याहरण, संशय कल्लोळ, रव्यंवर, पुण्यप्रभाव, चित्रचंजना, सन्यासाचा संसार, भावबंधन, एकच प्याला, द्रौपदी, सत्तेचे गुलाम, पटवर्धन, वरचंजना, सौभाग्य लक्ष्मी, श्री, मेनका, रणदुंदुभी, शिक्काकट्यार, तुलसीदास, विधिलिरिवत, साधवी मीराबाई, युगांतर, कान्होपात्रा, सावित्री, अमृत सिद्धी, उद्याचा संसार, लज्जाची बेडी, आंधळ्याची शाळ, रव्यंसेवक, प्रेमसन्यास, आणि कुलवधु.

हे ध्वनिफीत संच रसिकांसाठी एक अतिशय दुर्मिळ ठेवा ठरणार यांत शंका नाही.

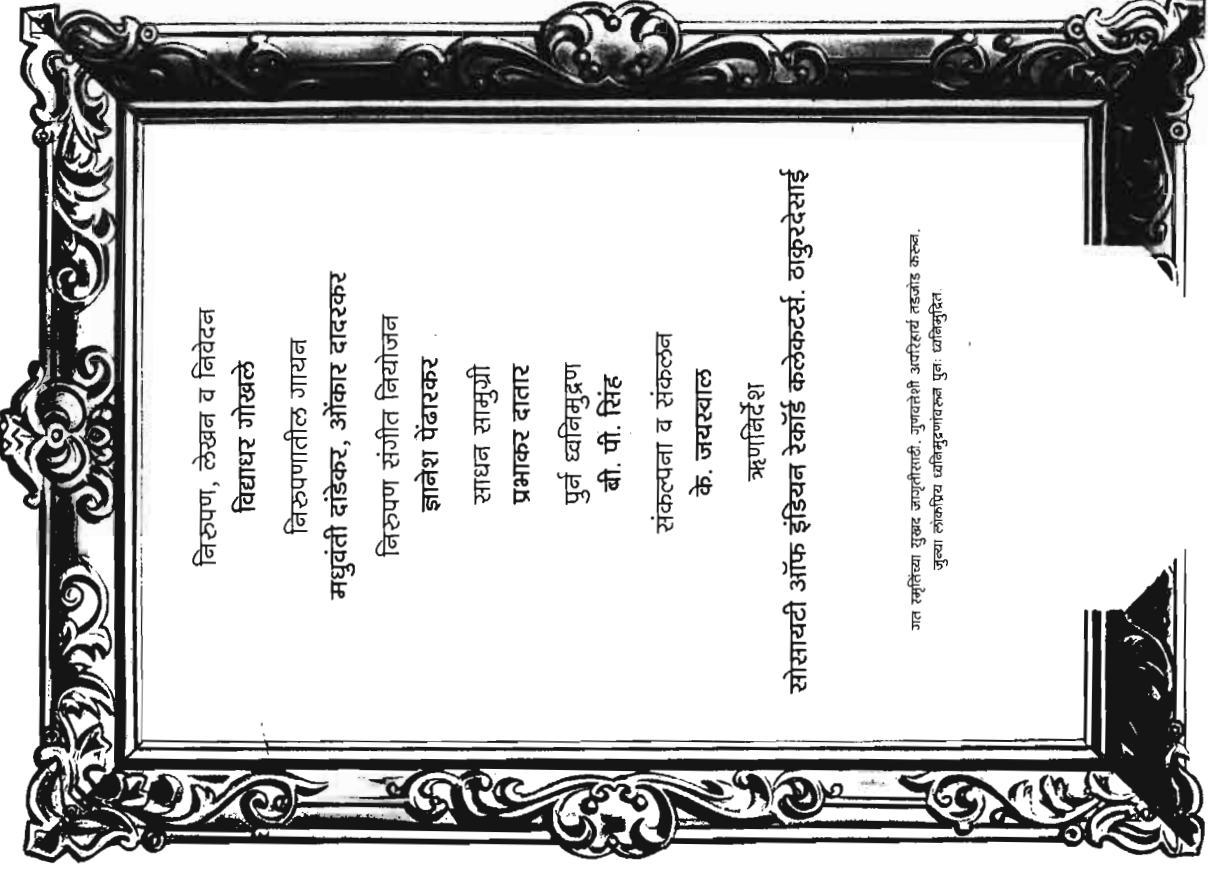
एच. एम. व्ही. सहर्ष सादर करीत आहे...

नाट्य गीतरांगा

शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२)



शाकुंतल ते कुलवधु



निरुपण, लेखन व निवेदन
विद्याधर गोखले

निरुपणातील गायन
मधुवंती दांडेकर, ओंकार दादरकर

निरुपण संगीत नियोजन
ज्ञानेश पेंडारकर

साधन सामुग्री
प्रभाकर दातार

पुर्न ध्वनिमुद्रण
बी. पी. सिंह

संकल्पना व संकलन
के. जयखाल

ऋणनिर्देश

सोसायटी ऑफ इंडियन रेकॉर्ड कलेक्टर्स. ठाकुरदेसाई

गत स्मृतिव्या सुखद जाणूतीसाठी. गुणवत्तेशी अपरिहार्य तळजोड करून.
जुल्या लोकप्रिय ध्वनिमुद्रणारूढ पुनः ध्वनिकुशिन.

शाकुंतल ते कुलवधु

REVIEW -

" NATYA GEETGANGA - 'SHAKUNTAL TO KULWADHU' [1880-1942] "
- A FOUR CASSETTE PACK (TPHV 845223-26) : 1996.
=====

Marathi sangeet (musical) dramas and songs in these dramas is a peculiarity of Maharashtra. In 1842/43 Mr.Vishnudas Bhave laid the foundation of Marathi drama at Sangli. To celebrate 150th anniversary of this event SIRC presented a listening session titled - 'Shankutal Te Kulvadh' in 1992. Mr.Prabhakar Datar selected the songs for this programme. The listening session was successful beyond our expectations.

Four years later in 1995/96 HMV proposed to reissue some of the monumental Marathi stage songs under the same title viz. SHAKUNTAL TO KULWADHU and to preserve the golden voices of old masters recorded on 78's shellacs. Mr.Prabhakar Datar and SIRC decided to co-operate this venture and the outcome is this wonderful four cassette pack. It contains about 65 songs from 40 dramas and sung by about 40 different artists. The selection of the songs is done by Mr.Datar and the scholarly commentary is given by Mr.Vidyadhar Gokhale.

In February 1996, this four cassette pack was released under the title - 'Shakuntal Te Kulvadh'. All the 78's used were provided by Mr.Prabhakar Datar and he insisted that SIRC should be given credit on the display cover. Through this cassette some of our old master's voices have been now preserved. We are most grateful to Mr.Datar for his help and support provided to HMV in making this dream a reality.

A release function for this cassette was organised by HMV and the set was released / inagurated by chief guest Mr.Bal Thackrey. He felicitated Mr.Datar and Mr.Chandvankar along with others who helped in the production of this cassette set containing historical recordings.

As narrated by Mr.Gokhale in his commentary, these songs will help an uninitiated listener in getting familiar with the classical and light classical music of India. This is because these songs are based on pure classical ragas, thumbris, horis and Punjabi and Kannadi gayaki. Also included are folk styles like Lavni, Phataka, Jillah and so on. Transfers from old noisy 78's is excellent. Mr.Gokhale's commentary is appropriate. However the songs by Madhuvanti Dandekar, Omkar Dadarkar are not fitting to the mood and objective of this cassette. Instead Mr.Gokhale should have just recited these poems.

This cassette lacks very severely in providing sufficient documentary information. All the four cassettes have beautiful old pictures on inlay cards. These are the scenes from drama and the pictures were provided by Mr.A.G.Thakurdesai. However there is no explanation/details of these pictures and these are left to the readers/listeners imagination.



SHIVSENAPRAMUKH SHRI BALASAHEB THACKREY RELEASING THE
'NATYA GEET GANGA' CASSETTE. [FEBRUARY 1996].
EXTREME RIGHT: MR. PRABHAKAR DATAR, SURESH CHANDVANKAR
AND MR. ASHOK THAKURDESAI



SHIVSENAPRAMUKH SHRI BALASAHEB THACKREY FELICITATING MR. SURESH
CHANDVANKAR

In the song details given on the inlay cards there are severe mistakes which could have been taken care of. To give an example - cassette no.3,side two last track - 'Payori Maine' sung by Balgandharva from drama - 'Sadhwi Meerabai'. Credit is given to Mr.S.A.Shukla who was the author of the drama. He had also composed some songs but how can one give credit to him for this well known Meera bhajan. In fact in the last stanza,line 'Meera Kahe' can be distinctly heard.

The songs are reissued from old original 78's. However there is no mention about the date/month/year of issue of the record and hence one doesn't know whether the recording is from acoustic or electrical era.

Already HMV is known to make serious mistakes on the cassette covers and on inlay cards. But at least care should have been taken while issuing these historical recordings. This is because this information shall be used by generations after generations for their research and same incorrect information shall be passed on.

- suresh chandvankar,Hon.Secetary,SIRC,Mumbai



नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२)



पहिली बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
निवेदनातील गायन: ओंकार दादरकर
मना लक्ष्मणसुखी
केशवराव पोसले
नाटक: शाकुंतल
गीत: ब.पं. किलोस्कर
वध जाऊ कुपाला हरण
सवाई गंधर्व
नाटक: सौभद्र
गीत: ब.पं. किलोस्कर
नव सुवरी कत कडेपा
खां साहेब अब्दुल करीम खां
नाटक: सौभद्र
गीत: ब.पं. किलोस्कर
बहुत दिन नव घेटलो सुंदरीला
श्रीपाद नेवरेकर
नाटक: सौभद्र
गीत: ब.पं. किलोस्कर
बदनी धर्म जलाला
गं. दीनानाथ मंगेशकर
नाटक: सौभद्र
गीत: ब.पं. किलोस्कर
पावना जायना
अनंत वेरणेकर
नाटक: सौभद्र
गीत: ब.पं. किलोस्कर
अरसिक किती हा सोला
सुभासिनी मुळगांबकर
नाटक: सौभद्र
गीत: ब.पं. किलोस्कर

निरुपण, लेखन व निवेदन: विद्याधर गोखले
निरुपणातील गायन: मधुवंती दांडेकर,
निरुपण संगीत नियोजक: ज्ञानेश वैद्यकर

दुसरी बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
शत शत कलिका ही
मा. दीनानाथ मंगेशकर
नाटक: रामराय विवोग
गीत: ब.पं. किलोस्कर
मन पाझे घडकुनी गेले
केशवराव पोसले
नाटक: रामराय विवोग
गीत: ब.पं. किलोस्कर
रजनीनाथ हा
छोटा गंधर्व
नाटक: मूच्छकटिक
गीत: गो. ब. देवल
आम्हे नटरी
श्रीपाद नेवरेकर
नाटक: मूच्छकटिक
गीत: गो. ब. देवल
त्रिपासी रामबाया जाऊ
परावत लोलेकर
नाटक: मूच्छकटिक
गीत: गो. ब. देवल
बाहुत परिन उषदेश
बालगंधर्व
नाटक: शापसंभ्रम
गीत: गो. ब. देवल
किंवाधरा मधुरा
कृष्णराव गोरे
नाटक: शारदा
गीत: गो. ब. देवल
पुर्वीमंत भीती उभी
बालगंधर्व
नाटक: शारदा
गीत: गो. ब. देवल
उगीच कां कांता
खां साहेब अब्दुल करीम खां
नाटक: मुक्तायक
गीत: श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२) पुणे: कलिंगी.

Original sound recording made by The Gramophone Co. of India Ltd.
All rights of the owner of the recorded work reserved.
Unauthorised copying public performance and broadcasting of this recording prohibited
TPHV 845223

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२)



पहिली बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
निवेदनातील गायन: मधुवंती दांडेकर
हा टकटक पाही सुर्य
बालगंधर्व
नाटक: मानापमान
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
चंद्रिका ही जणु
कृष्णराव रोडे
नाटक: मानापमान
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
विद्याधर मन स्वाहिना
बापूराव पेडारकर
नाटक: मानापमान
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
नाही मी बोलत नाचा
प्रभिला आधव
नाटक: मानापमान
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
ना देई विन्ती धारा
दत्तोपंत
नाटक: मनोविजय
दिसत न कशी धयता
रिपुबाई बडोदेकर
नाटक: विद्याहरण
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
अहंकार पाह्या
बापूराव पेडारकर
नाटक: विद्याहरण
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
मधुकर वनवन फिरत
बालगंधर्व
नाटक: विद्याहरण
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर

निरुपण, लेखन व निवेदन: विद्याधर गोखले
निरुपणातील गायन: मधुवंती दांडेकर,
निरुपण संगीत नियोजक: ज्ञानेश वैद्यकर

दुसरी बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
मनिती आपुली
सुरेश हळदणकर
नाटक: संशय कस्तूळ
गीत: गो. ब. देवल
संशय कां मनी आला
मीनाक्षी
नाटक: संशय कस्तूळ
गीत: गो. ब. देवल
सुजन कसा मन खोरी
बालगंधर्व
नाटक: स्वयंवर
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
बोल होईल फोल
पंडरपुरकर मुळा
नाटक: स्वयंवर
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
नाचत ना मगनात नाचा
मा. दीनानाथ मंगेशकर
नाटक: पुण्यप्रभात
गीत: रा.ग. गडकरी
ध्यारी नारी विलासली
बाळकृष्ण नावडेकर
नाटक: विवाहवचना
गीत: बाबूदेव तामन खरे
बाहे पाहुरंगा
बापूराव पेडारकर
नाटक: संन्यासाचा संसार
गीत: भा. वि. बोरकर
कठिण कठिण कठिण किती
मा. दीनानाथ मंगेशकर
नाटक: भावबंधन
गीत: रा.ग. गडकरी
जरत बाला योग असा
जी.एम्. लोडे
नाटक: भावबंधन
गीत: रा.ग. गडकरी

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२) पुणे: कलिंगी.

Original sound recording made by The Gramophone Co. of India Ltd.
All rights of the owner of the recorded work reserved.
Unauthorised copying public performance and broadcasting of this recording prohibited
TPHV 845224

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२)



पहिली बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
सत्यवधे वचनानाला नाचा
बालगंधर्व
नाटक: एकच प्याला
गीत: वि.सि. गुर्जर
झुण्णी हे करवा
श्रीपाद नेवरेकर
नाटक: एकच प्याला
गीत: वि.सि. गुर्जर
लवना मना
सरस्वती राणे
नाटक: एकच प्याला
गीत: वि.सि. गुर्जर
तनुला जाळी आग भडकली
बालगंधर्व
नाटक: शौपदी
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
जो नटना
गोविंद पारोलेकर
नाटक: सतेबे गुलाम
गीत: भा. वि. बोरकर
भधुसुदना हे भाबळा
मा. शान्तराम
नाटक: पटवर्धन
गीत: गोविंद सदाशिव टेबे
सुंदरा ममेना
बापूराव केतकर
नाटक: वरवचना
गीत: गोविंद सदाशिव टेबे
नुपती कन्या कां वाटे अनुरूप
शंकरराव सरनाईक
नाटक: वरवचना
गीत: गोविंद सदाशिव टेबे
बोल हसरे बोल ध्यारे
निर्मला आधव
नाटक: सौभाग्यलक्ष्मी
गीत: स.अ. शुक्ल

निरुपण, लेखन व निवेदन: विद्याधर गोखले
निरुपणातील गायन: मधुवंती दांडेकर, ओंकार दादरकर
निरुपण संगीत नियोजक: ज्ञानेश वैद्यकर

दुसरी बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
निवेदनातील गायन: ओंकार दादरकर आणि मधुवंती दांडेकर
सखी मुळावे
बापूराव पेडारकर
नाटक: श्री
गीत: न.ग. कमलनूरकर
कुसुम विधि चारुकांत
मा. कृष्णराव
नाटक: मेनका
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
विक्रिते जरीं ते
मा. दीनानाथ मंगेशकर
नाटक: रणदुधी
गीत: वामन गोपाळ जोशी
माता वचन दे संदा
मा. दामले र्क नूतन वैद्यकर
नाटक: शिळा कटपार
गीत: य.ना. टिपणीस
राम रंगी रंगले धन
पंडितराव नगरकर
नाटक: तुलसीदास
गीत: गोविंद सदाशिव टेबे
मी न खंजक
प्रो. विनायकराव पटवर्धन
नाटक: विधिलिखित
गीत: वसंत शान्तराम देसाई
बुजालाला गाडे
हिराबाई बडोदेकर
नाटक: साध्वी मीराबाई
गीत: स.अ. शुक्ल
पाचोरी मैने
बालगंधर्व
नाटक: साध्वी मीराबाई
गीत: स.अ. शुक्ल

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२) पुणे: कलिंगी.

Original sound recording made by The Gramophone Co. of India Ltd.
All rights of the owner of the recorded work reserved.
Unauthorised copying public performance and broadcasting of this recording prohibited
TPHV 845225

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२)



पहिली बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
निवेदनातील गायन: ओंकार दादरकर
लक्ष्मणा दिसे सुप्रभाती
प्रो. सुरेशमा
नाटक: पुर्णार
गीत: ना.सी. फडके
अकथोष्ठी संसार
गोहरबाई रजईस
नाटक: कान्होपात्रा
गीत: ना.वि. कुळकर्णी
अरुणी नटे ही बालता
प्रो. विनायकराव पटवर्धन
नाटक: कान्होपात्रा
गीत: ना.वि. कुळकर्णी
प्रिय जरी हा सखवास
जी.एम्. लोडे
नाटक: सावित्री
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
सनासन नाच हा
मा. कृष्णराव
नाटक: सावित्री
गीत: कृ.प्र. खाडिलकर
धन्य तुम्हा कांता
जी.एम्. लोडे
नाटक: अमृतसिद्धि
गीत: वसंत शान्तराम देसाई

निरुपण, लेखन व निवेदन: विद्याधर गोखले
निरुपणातील गायन: मधुवंती दांडेकर, ओंकार दादरकर
निरुपण संगीत नियोजक: ज्ञानेश वैद्यकर

दुसरी बाजू:
निवेदन: विद्याधर गोखले
निवेदनातील गायन: मधुवंती दांडेकर
वेड लावी जी विवाला
छोटा गंधर्व
नाटक: उषाचा संसार
गीत: प्र.के. अत्रे
ती पाहताच बाला
पंडितराव नगरकर
नाटक: लक्ष्मी बेडी
गीत: प्र.के. अत्रे
एकलेपणाची आग लागली
ज्योत्सना धोडे
नाटक: ओंकारदास शारदा
गीत: श्रीधर-विनायक वर्तक
वा प्रजाची लवना मना
मा. धार्गवराव
नाटक: स्वयंसेवक
गीत: भा.वि. बोरकर
प्रणवा नवल्वी देता
जी.एम्. लोडे
नाटक: प्रेम संन्यास
गीत: वसंत शान्तराम देसाई
धाम्यवती मी विधुवनी झाले
ज्योत्सना धोडे आणि अविनाश
नाटक: कुलवधु
गीत: मो.ग. रांगणेकर
कां कधी अशा वचना
अविनाश
नाटक: कुलवधु
गीत: मो.ग. रांगणेकर
बोला अपुसबोला
ज्योत्सना धोडे
नाटक: कुलवधु
गीत: मो.ग. रांगणेकर
धरत बाबय

नाट्य गीतगंगा शाकुंतल ते कुलवधु (१८८०-१९४२) पुणे: कलिंगी.

Original sound recording made by The Gramophone Co. of India Ltd.
All rights of the owner of the recorded work reserved.
Unauthorised copying public performance and broadcasting of this recording prohibited
TPHV 845226

LETTERS TO THE EDITOR

From - Mr.Romesh C.Aeri,20,Ashton Avenue Downsview
ONT.CANADA M3M 1G5.Tel.(416) 242-8300

Date:July 25,1995

Dear Mr.Chandvankar,

Please accept my heartfelt and sincere thanks for speedily despatching the TRN material through my friend Mr.Toor. Also I must hasten to add my congratulations to you personally for the commendable work you are doing for this precious component of Indian cultural heritage. Perhaps in the past there was no organised attempt made in this regard for the cause of Indian music on gramophone records.

The instant I started going through the material in the journal,your tremendous personal enthusiasm,love and bhakti (absolute devotion) began to skin forth. The TRN's would indeed be of great benefit as here one is always starved of the news about Indian music and recordings. Perhaps a copy of an audio or video of the SIRC meetings and the proceedings would add more to it.

Here in the west, I find deep interest in Indian music especially amongst serious students of music and academicians. On a personal note,I enjoy collecting as much as I do listening. If you can let the word about my desire to get in touch with Agra Gharana broadcast recordings (or mehfiles or concerts),then in an exchange I can source out North American and European issues of CD's of Indian music.

My collection mostly includes North Indian Classical music recordings [CD's] of labels like Rhythm House,EMI,T.Series,MIL Inderico-India,Jecklin,Wergo,Music of the world,EMI (North America),Polydor,World Pacific,Audiorec,Ocora,Auvidis,Rounder, Nimbus(entire selection),Navras,Natraj,Musenalp,Maker,Chandhra Dhara,Venus,Neelam Audio,Alurkar CD's,Moment Records,Raga Records (New York),Sam,Biswas,Nonesuch etc.to name a few.

Looking for an interesting long association with all of you there. What has pleased me most is the fact that we have eminent academicians like Mr.Michael S. Kinnear (Australia) and Prof.Sharadbhai Mehta with us in our activity to guide and advice us. Now what about Calcutta people like Sharbari Roy ?

Thanks again,

Sincerely Yours,

Sd/-

[Romesh C.Aeri]

=====

खोसायती ऑफ इंडियन रेकार्ड कलेक्टर्स
शाखा-सोलापूर आयोजित

अल्पकाळकीर्त गाजवून विस्मृतीच्या ढगाआड
गोलेल्या चमकदार संगीतकारांवर आधारित

खोसा खोसा चांद

रविवार दि १८ फेब्रुवारी ९६ • सायं: ६:००

सेवादातन प्रशाला, सभागृह, सोलापूर

या एवढेसुद्धेत सहभागी होण्याचं अस्नेह निमंत्रण

• मोहन सोहनी • जयंत लळेरासकर • अशोक थोबडे

परे ब्रदर्स

Music Directors - forgotten

The world of Hindi film songs has its glorious contribution by hundreds of music Directors.

Some of them have contributed very less quantity wise but ~~are~~ ^{can be} remembered for just one song. Yes, there are many such! SIRC, Solapur have devised a series of program to mark the memory of such music Director who are forgotten - 'In oblivion!'. Out of 4 such program we have presented first such program on 18-2-96 — 'KHOYA KHOYA GHAND'.

SIRC NEWS FROM SOLAPUR

During the period of this report we presented following listening sessions - 'Khoaya Khoaya Chand' - a series of sessions on - "Music directors-forgotten".

The world of Hindi film songs has it's glorious contribution by hundreds of composers/music directors. Some of them have contributed very little but they are remembered even just for one song. Yes, there are many such composers! SIRC, Solapur has planned a series of listening sessions to mark the memory of such forgotten composers - 'In Oblivion'. Out of four such programmes we have presented first one on February 18, 1996 under the title series - 'Khoaya Khoaya Chand'. This sessions was attended by over 100 listeners. Mr. T.V. Sardeshmukh, noted author and critic of Marathi literature was felicitated on this occasion. He expressed that this gift of nostalgia will prove to be the great gift and relief for everyone in the audience. The title was suggested by Pore brothers who also made an interesting invitation card keeping up with their reputation in this field.

=====
[I] Details of the songs played in the programme -
" Khoaya Khoaya Chand " - Part 1 on 18.02.1996

MUSIC DIRECTOR / SONG TITLE / FILM / ARTIST / LYRICIST
=====

- 1] Gyandutt / Nain Heen Ko Rah Deekha Prabhu / Bhakta Surdas / K.L.Saigal / D.N.Madhok
- 2] Pandit Govindram / Man Bhooli Kathaye / Doosari Shadi / Shamshad Begum
- 3] Kamaldas Gupta / Ae Chand Chhup Na Jana / Jawab / Kanan Devi / Pandit Madhur
- 4] Khemraj / Chanda Des Piyake Ja / Bhartruhari / Ameerbai
- 5] Bulu C.Rani / Mast Chandani Jhoom Rahi Hai / Pyarki Baaten / Mukesh and Geeta Dutt / M.L.Khanna
- 6] K.Datta / Aa Intezar Hai Tera / Badi Ma / Noorjahan
- 7] Ram Ganguli / Kahe Koyal Shor Machaye / Aag / Shamshad Begum
- 8] Pandit Amarnath / Hath Seenepe Jo Rakh De / Mirza Ghalib / Noorjahan and G.M.Durani
- 9] Shyam Sundar / Kya Raat Suhani Hai / Alif Laila / Lata Mangeshkar and Mohammad Rafi / Sahir Ludhianvi
- 10] Jamal Sen / Door Des Se Aaja Re / Shokhiyan / Suraiyya and Lata Mangeshkar / Kedar Sharma
- 11] S.D.Batish / Jala Kar Aag Dilmen / Toofan / S.D.Batish / Waheed Quereshi
- 12] Mohammad shafi / O Bichhade Huve Sathi / Halchal / Lata Mangeshkar and Mohammad Rafi / Kumar Barabanqvi
- 13] Nashad / Tasveer Banata Hun / Baradari / Talat Mehmod / Kumar Barabanqvi
- 14] Shivram / Daulatke Jhoote Nashemen / Donchi Haveli / Mohammad Rafi / Bharat Vyas
- 15] Arunkumar / Gore Gore Haathonme / Parineeta / Asha Bhosle and chorus

सोसायटी ऑफ इंडियन

रेकॉर्ड कलेक्टर, शाखा सोलापूर



'पिल्' रागावरील आधारित
नाट्यगीते, वाद्यसंगीत, गायन व
चित्रपट संगीताच्या बहारदार ध्वनिमुद्रित
कार्यक्रमास आगल्याने यावे.

एविवार दि. ७ एप्रिल १९६६. सायं. ६:३०

सेवासदन प्रहाला. सोलापूर

विनीत: मोहन सोहनी, जयंत राळेरासकर, अशोक थोबडे.

Programme

- ① It was a joint venture of SIRC & Sangeet Sabha
- ② Veteran singer :- Pt Prabhudev Sardar explained the Raag Piloo & its significant points. He wished SIRC to flourish in its activities.
- ③ As many as 80-100 listeners attended the programme and they were moved by the collection / presentation
- ④ Mohan Sohoni & Jayant Raterasakar presented the programme

- 16] Timir Baran / Kaise Koi Jiye / Badbaan / Geeta Dutt / Indivar
- 17] A.R.Qureshi / Dil Matwala / Bewafa / Lata Mangeshkar / Sardar Sailani
- 18] Vinod / Yaad Aanewale / Anmol Ratan / Talat Mehmood and Lata Mangeshkar
- 19] Feroz Nizami / Yahan Badla Wafaka / Jugnoo / Mohammad Rafi and Noorjahan
- 20] Sajjad Hussain / Ye Kaisi Aajab Dastan / Rustam Soharab / Suraiyya

=====

[II] Details of the songs played in the programme -
 " Khoya Khoya Chand " - Part 2 on 16.03.1996

MUSIC DIRECTOR / SONG TITLE / FILM / ARTIST / LYRICIST

=====

- 1] Ali Akbar Khan / Aai Kahinpar Shadmani / Aandhiyan / Lata Mangeshkar / Pandit Narendra Sharma
 - 2] Snehal Bhatkar / Sochata Hun / Hamari Yaad Aayegi / Lata Mangeshkar and Mukesh
 - 3] Sudhir Phadke / Jyoti Kalash Chalke / Bhabhiki Chudiyen / Lata Mangeshkar / Pandit Narendra Sharma
 - 4] Jagmohan / Pyarki Ye Talkhiyan / Sardar / Lata Mangeshkar / Kaif Irfani
 - 5] Ninoo Mujumdar / Nazarne Kaha Diya / Bhaisaab / C.H.Atma / Shailendra
 - 6] Krishnadayal / Badraki Chhaontale / Lekh / Suraiyya and Mukesh / Raghupat Rai
 - 7] Babul / Aankh Me Shokhi / Reshmi Rumal / Suman Kalyanpur and Manna Dey / Raja Mehendi Ali Khan
 - 8] Shivramkrishna / Kitna Meetha Hota Hai / Teen Batti Char Rasta / Lata Mangeshkar / P.L.Santoshi
 - 9] Chic Cholote / Aa Teri Tasveer / Naadan / Talat Mehmood / P.L.Santoshi
 - 10] Shailesh / Aansooki Chhaonmen / Parichay / Lata Mangeshkar
 - 11] S.Madan / Ye Raat Ye Phijhae / Batwara / Mohammad Rafi and Asha Bhosle / Majrooh Sultanpuri
 - 12] B.D.Burman / Manzi Meri Naiyya / Chaar Paise / Lata Mangeshkar
 - 13] G.S.Kohli / Baharon Tham Lo Mera / Namasteji / Mukesh and Lata Mangeshkar
 - 14] Vasant Ramchandra / Jamuna Ke Teer / Suhagan / Lata Mangeshkar
 - 15] Jayant Joshi / Pyarki Baaten / Matlabi Duniya / Mukesh / Ramesh Gupta
 - 16] S.Sudarshan / Baat Chalat / Ladki / Geeta Dutt
 - 17] C.Arjun / Nazar Ootha Ke Ye / Ek Saal Pahale / Talat Mehmood and Asha Bhosle / Akhtar
 - 18] Iqbal Qureshi / Ta Thaiyya Karake / Panchayat / Lata Mangeshkar and Geeta Dutt
 - 19] Pardesi / Chand Ri Mori / Banjaran / Lata Mangeshkar and Mukesh
 - 20] S. Mohindar / Gujara Huva Jamana / Shiri Farhad / Lata Mangeshkar / Tanveer Naqvi
- =====

संगीत सभा



Sitting-Left:Mr.Ashok Thobde,third:Pt.Prabhudev Sardar
Right:Mr.Mohan Sohoni
Standing:Center-Mr.Jayant Raleraskar
Right:Mr.Nikhil Raleraskar

[III] Details of the songs played in the programme -
" Raga Piloo " presented jointly by SIRC,Solapur and Sangeet
Sabha. Veteran musician and singer Pandit Prabhudev Sardar
explained raga Piloo and its significance. Over 100 music
lovers attended this programme. Mr.Mohan Sohoni and Mr.Jayant
Raleraskar presented the programme. The records played were -

- 1] Shehanai / Raga Piloo / Bismillah Khan
- 2] Abdul Karim Khan / Soch Samajh Nadan / Columbia BEX 260
- 3] Bansari / Pannalal Ghosh (Piloo Thumri) / HMV N 15923
- 4] Kuthe Guntala (From Marathi drama:Satyagrahi) / G.N.Joshi /
HMV N 5077
- 5] Harmonium-Piano / V.Balsara and Gyanprakash Ghosh / Tabla:
Shymal Ghosh
- 6] Chandanka Palna / From Hindi film:Shabab / Hemant Kumar /
Naushad
- 7] Prof.Narayanrao Vyas / Kamaniya Kaheko (Piloo Thumri)
/ HMV N 5698
- 8] G.M.Londhe / Priya Jari Ha Sahavas Mala (From Marathi
drama:Savitri) / ODEON SA 3008
- 9] Sitar-Guitar / Raiskhan and Brijbhushan Kabra
/ HMV LP ECSD 2485
- 10] Gulam Ali / Balam Mohe Chhodke Na Ja
- 11] Begum Akhtar / Piloo Thumri
- 12] Tarap Tarap / (From Hindi film:Shatranjke Khiladi) / Amjad
Khan
- 13] Mohe Panghatpe Nandlal / Lata Mangeshkar / Naushad /
Shakeel Badayuni / ODEON LP 3AEX 5003
- 14] Sarod / Amjad Ali Khan / Tabla:Chandra Mohan
- 15] Nirmala Devi / Mori Bali Oomar (Piloo Thumri)
/ HMV N 88072
- 16] Bade Gulam Ali Khan / Biraha Na Jala
- 17] Bansari and Santoor / Hariprasad Chaurasiya and Shivkumar
Sharma
- 18] De Hanta Ya Sharanangata / Chhota Gandharva (From Marathi
drama:Manapman) / HMV ECLP 2312

[IV] Details of the songs shown on video in the programme - " Inimitable Nutan ". This programme, presented on June 23, 1996 was attended by over 200 music lovers. It was conceived and edited by Nikhil Raleraskar, Santosh Surawase of sunrise studio. The programme took its final shape after painstaking efforts for over two months. Pore brothers prepared nice invitation and newspapers gave wide pre-publicity to this programme. Also the event was covered by Solapur Vrutta Darshan for T.V.cable operators.

=====

SONG TITLE / FILM

1] Music Piece / Sujata 2] Jogan Ban Jaungi / Shabab 3] Kali Ghata Chhaye / Sujata 4] Nainomen Surajki / Basant 5] Baje Payal Cham Cham / Chhaliya 6] Ye Tanhai Haya / Tere Gharke Samne 7] O Nigah Mastana / Paying Guest 8] Shayari Sequence / Dil Hi To Hai 9] Nigah Milaneko / Dil Hi To Hai 10] Phool Tumhe / Saraswati Chandra 11] Chand Phir Nikala / Paying Guest 12] Jogi Jabse Tu Aaya / Bandini 13] Ek Ghar Banaunga / Tere Gharke Samne 14] Sequence from Anari 15] Chori Chori Ik Ishara / Basant 16] Pyar Par Bas To / Soneki Chidiya 17] Haya Unki Woh Nigah / Akhari Dav 18] Sequence from unreleased film 'Shikwa' 19] Tera Mera Sath Rahe / Saudagar 20] Dil Diya Hai / Karma 21] Chandansa Badan / Saraswati Chandra 22] Wo Chand Khila / Anari 23] Cat Cat / Dillika Thug 24] Dekho Rutha Na Karo / Tere Gharke Samne 25] Lata Mangeshkar speaks on Nutan 26] Man Mohana / Seema 27] Mora Gora Aanga Laile / Bandini 28] Suno Chotisi Gudiyaki / seema

=====

Mr. Jayant Raleraskar, 154 A 'Nirzar' Indira Nagar
 Bijapur Road, Solapur - 413 004. Maharashtra State. India
 Phone - 0217-611 424

=====

ACTRESS/SINGER NUTAN



श्रीधरजीर
 नूतन

=====

SIRC NEWS FROM TULJAPUR

SIRC, Tuljapur activity began from 8th June 1996. Surprisingly there was a very good response and about 60 music lovers attended this programme and the listening session. In the beginning Mr. Shashikant Lavnis explained the need for such programmes and welcomed the audience. The SIRC, Tuljapur unit was inaugurated by Mr. Mohan Sohoni - President, SIRC, Solapur. Mr. Jayant Raleraskar, Hon. Secretary SIRC, Solapur explained the importance of record collection and gave information about SIRC and its activities.

The programme was conducted by Mr. Sudhir Peshwe who initiated this activity at Tuljapur and he also proposed vote of thanks. A nice invitation card was prepared by Mr. Shashikant Lavnis. The programme titled - 'Rimjhim Ke Tarane' was composed of Hindi film songs based on monsoon mood. The atmosphere was elevated when a sudden shower drenched the surroundings of the hall. The songs played were -

SONG TITLE / FILM / MUSIC BY / LYRIC / SINGERS / RECORD NUMBER

- 1] Aha Rimjhimke Ye / Usne Kaha Tha / Salil Chowdhari / Shailendra / Talat Mehmood and Lata Mangeshkar / HMV LP 3AEX 5206
- 2] Rimjhim Rimjhim Badarava / Tangawali / Salil Chowdhari / Shailendra / Prem Dhavan / Lata Mangeshkar / HMV BMLP 2020
- 3] Sawanmen Barkha / Biwi Aur Makan / Hemantkumar / Gulzar / Hemant Kumar / HMV PMLP 193
- 4] Jindagibhar Nahī Bhulegi / Barsatki Raat / Roshan / Sahir Ludhianvi / Mohammad Rafi / HMV ECLP 5603
- 5] Thandi Hava Kali Ghata / Mr. & Mrs. 55 / O.P. Naiyyar Majrooh Sultanpuri / Geeta Dutt / HMV MOAE 4157
- 6] Rimjhim Ke Tarane Leke Aayi Barsat / Kala Bazaar / S.D. Burman / Geeta Dutt and Mohammad Rafi / Cassette
- 7] Jhir Jhir Barse Sawan / Ashirwad / Vasant Desai / Gulzar / Lata Mangeshkar / HMV BMLP 2026
- 8] Dekho Bina Sawan / Sawan / Hansraj Behal / Prem Dhavan / Mohammad Rafi / HMV ECLP 5849
- 9] Ham Tum Ye Bahar / Ambar / Gulam Mohammad / Shakeel Badayuni / HMV BMLP 2019
- 10] Sawanki Ratonmen / Prem Patra / Salil Chowdhari / Gulzar / Talat Mehmood and Lata Mangeshkar / Cassette
- 11] O Sajana Barkha Bahar Aayi / Parakh / Salil Chowdhuri / Shailendra / Lata Mangeshkar / HMV 3AEX 5206
- 12] Sawan Aye Ya Na Aye / Dil Diya Dard Liya / Naushad / Shakeel Badayuni / Mohammad Rafi / HMV ECLP 5404
- 13] Sawanke Jhoole Pade / Jurmana / R.D. Burman / Anand Bakshi / Lata Mangeshkar / HMV ECLP 5582
- 14] Lapak Jhapak Tu / Boot Polish / Shankar Jaikishan / Shailendra / Manna Dey and Chorus / HMV ECLP 5710
- 15] Ajahu Na Aaye Balama / Sanjh Aur Sawera / Shankar Jaikishan / Hasrat Jaipuri / Suman Kalyanpur and Mohammad Rafi / HMV EMGP 5023

- Sudheer Peshwe

From - Mr. Pushpendra Singh Jadeja, Virpur House, Moti Tanki
Subhash Road, Rajkot - 360 001

July - 1950 (H.M.V. Co.)

शास्त्रीय संगीत



केसरबाई केरकर

अलख भगवान आन गायन
पहिले म्यान पर धरणाच्या या गाथिने
अपानम नलिनच्यो रेकारे.

HQ 1 | इना जरे हुं - जोक
| इत न कर्मा रैन



★	HQ 2	रमिया हुं ना जके नद विहागे भ वन मीन	★	29319	विदधी लुडी ते मयन मंडे शुं गाल वुं	खानसाहेब वडे गुलाम अली मुय्यानी काकी मिया काकी
★	HQ 3	अखियां सोरो वजे येया	★	35192	खानसाहेब वडे गुलामअली खान यांचे पूर्वी प्रसिद्ध झालेले रेकार्डिस नेना मोंग तरम रहे याद मियाकी आयी	-अमला भैरवी दुप -दुमे -स्वत
★	HQ 4	एकीकत रे नेर वाजु रे	★	36341	विनामी का कमीय वान नवली नार	-अजवती -कदारा
★	HQ 5	मानन करी प्रियम मिया	★			
★	HQ 6	देवी दुगे... मोंग इरे आनी	★			

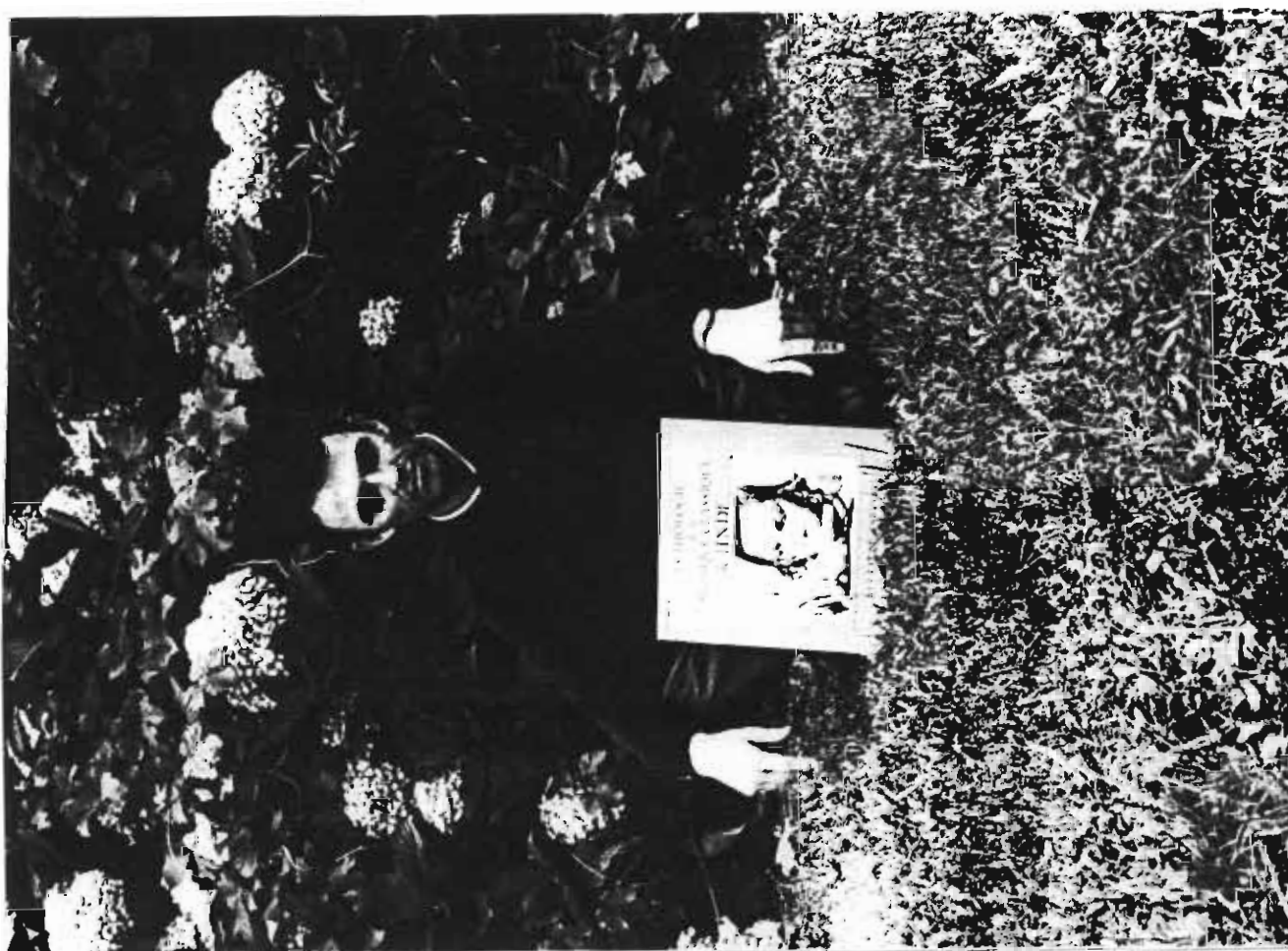
ई वाजवियाम हायफायडेलिटी सुया वापरल्यास आवाज गांड खर रेकार्डिस आणुष्य वाडते. एका सुर्यानिं पुक्कळ रेकार्डि वाजवितो येता?

(13)

(92)



TRADITIONAL MUSICIANS FROM BRITTANY, FRANCE
LEFT-BOMBARDE PLAYER. RIGHT-BINIAN PLAYER



Mr. Andre Brunel in his garden with Indian record.

THE RECORD COLLECTOR

Mr. Andre' Brunel, France

I am a life member of SIRC, 43 years old, French and living in the suburb of Paris. Originally I came from the west coast of France called 'Brittany'. In this part of France we have traditional music but not classical. As seen in the picture two musicians are playing a bombarde (like Shehanai) and a binian (bagpipe). The musicians in the beginning of this century had an amazing technical skill and the first 78's of their music are very very difficult to find. I am collecting these items. For the western music my taste goes to violin concerto and some piano works.

When I was five/seven years old, my father used to listen to radio programmes on shortwaves. Usually it used to be Arabian music from North Africa. I remember that period very much and probably that was the crucial period for developing my musical tastes later on. When I was sixteen, I bought my first Indian LP which was not classical as it was Anand Shankar playing with his sitar a hit from The Rolling Stones 'Jumping Jack Flash'. The sound of sitar was very much pleasing to my ears. Then was a long period to buy Rock'n Roll music. From time to time I used to buy some ethnic records from Iran, Japan, Bali, Ireland with some Ravi Shankar's LP's. About ten years ago, a day D arrived when I met a record collector in a big store in Paris. He took me to his own store and showed me his collection. That was perhaps the largest collection of Indian records in Europe. He knew quite well the records from North and South India.

From this period I began to look for Indian records in different labels. One day I had an opportunity to listen to some nice 78's of Indian music. The records were from South sung by Coimbatore Thayi...early 1905/10 recordings. That was something great to hear. The records of course were not for sale...but it didn't matter. I had the same surprise as it was once on the radio, late in the evenings!! I have also listened to great Turkish singer Hafiz Bourhan on radio. I realised that these 78's were very nice to look at and to listen to and I was fascinated with these old records. The sound is original and not trafficked!!!. These first recordings have got something of magic. They represent and show the evidence of the past and most of the time these have not been reissued on LP's and some of them might appear on CD's I hope. But how many singers and musicians are forgotten or disappeared for ever ???.

My little collection of records began to grow then. It is now of a reasonable size. My wish is not to become an important collector. I do not have money for it. When you are collecting, it's an history without end!. I rather like some good items of quality and would like to appeal to SIRC members

to help me in getting the records in the following labels - Gramophone Concert Record, Beka, Nicole, Pathe, Zonophone, Odeon. One or two records of each label and containing male and/or female voice will be alright. The records however must be in mint condition. I have no chance to find these in Europe. I am greatly interested in the first LP's period 1955-75. For instance all the records of - Bundu Khan, Mohammad Shareef Khan, Balram Pathak, Sharan Rani....Again the records should be in mint condition. I am also interested in getting the biographies of Sarangi players from India - especially Mr. Gopal Sharma.

I never had been to India but want to visit sometime in future and meet SIRC members and collectors. I would like to remind what has been said in volume three of The Record News - A National Sound Archives must be created in India. This is absolutely essential in India to preserve the musical heritage for the generations to come. SIRC is unique and shall grow slowly and steadily and will be profitable to all of us.

I have both the discographical works of Mr. Michael Kinnear and we all lovers of Indian music are lucky to have these books and thanks to Michael Kinnear for this great work. The discography of Hindustani and Karnatic music is a great source of reference and so is the one by Alain Danielau. Our quarterly magazine is a true bond between us and I hope that in the years to come we shall keep meeting each other through this journal. May be in future all the members from all over the world could meet in a seminar or a long week end in a place like Mumbai.

Finally I would like to thank to all those who have contributed in the creation of 'The Record News' and wish a long life for this unique journal.

- Andre' Brunel, 47 Rue Louise Michel
77380 Combs. La. Ville
Paris, France



Mr. Andre' Brunel (1994)

CONTENTS OF THE BACK ISSUES OF -

" THE RECORD NEWS "

TITLE OF THE ARTICLE / COMPILATION (NAME OF THE AUTHOR)

VOLUME 1 - JANUARY 1991

- Reading Indian record labels - Part One - Gramophone and Zonophone Records (Michael Kinnear)
- Surshree Smt.Kesarbai Kerkar - A Discography (Suresh Chandvankar)

VOLUME 2 - APRIL 1991

- A short introduction to Discography (Bill Dean-Myatt)
- Letters to the Editor
- Reading Indian record labels - Part Two - Nicole Record (Michael Kinnear)
- Discography of Late Pandit Kumar Gandharva (K.R.Tembe)

VOLUME 3 - JULY 1991

- Peculiar Records (Suresh Chandvankar)
- Records of Old Marathi Bhavgeete (A.G.Thakurdesai)
- Reading Indian record labels - Part Three - Beka Record (Michael Kinnear)
- Canned Concerts (Prof.R.C.Mehta)

VOLUME 4 - OCTOBER 1991

- Records of our national songs (Suresh Chandvankar)
- Records of the music composers from the oblivion. (S.Jayraman)
- Records of classical music in film songs (Prabhakar Datar)
- Reading Indian record labels-Part Four - Odeon Record and Odeon (Michael Kinnear)
- First annual report on SIRC activities - 1990/91

VOLUME 5 - JANUARY 1992

- Jugalbandi on records (K.R.Tembe)
- Records of Raga Marwa and Raga Shree (V.R.Joshi)
- Records of film songs of Madan Mohan (Pradeep Acharya)
- Khayal and Thumri gayaki of Late Miss Gauhar Jan of Calcutta (Prof.S.R.Mehta)
- Letters to the Editor
- The First Indian Disc Record Manufacturers (Michael Kinnear)
- Preserving the musical past of India through old Gramophone Records (Suresh Chandvankar)

VOLUME 6 - APRIL 1992

- Records of Desh Bhakti Geete (S.Jayraman)
- Records of old Marathi Bhavgeete (S.A.Sukhtankar)
- Records of Classical music and Popular songs (Prabhakar Datar)
- Records of Marathi Film Songs - 1930-1960 (Prabhakar Datar)
- Reading Indian record labels - Part Five - Pathe and Pathephone (Michael Kinnear)

VOLUME 7 - JULY 1992

- Musical tribute to Late Pandit Kumar Gandharva through old Gramophone Records (K.R.Tembe)
- Records of Late Master Deenanath Mangeshkar (Prabhakar Jathar and Ram Page)
- Records of Hindi film songs composed by O.P.Naiyyar (Jayant Raieraskar)
- 'Mera Naam Jankibai of Allahabad' (Prof.S.R.Mehta)
- Letters to the Editor
- W.S.Burke - The First Disc Record Artist of India (Michael Kinnear)
- " English " Indian Gramophone Numbers (Frank Andrews and Michael Kinnear)
- A Review of an audio cassette - "Swaranjali - A Homage to the Maestro" (Suresh Chandvankar)

VOLUME 8 - OCTOBER 1992

- Rare records of Asha Bhosle's Marathi Songs (Sharad Dalvi)
- Rare Hindi Film songs by Lata Mangeshkar on video (Prakash Joshi)
- Records of Late singer Mukesh (P.T.Shastrri)
- Records of Bal Gandharva - Ek Smaran (Prabhakar Datar)
- Biographical note on Late Mr.K.L.Saigal (Suresh Chandvankar)
- Discography of Late Mr.K.L.Saigal (Michael Kinnear)
- Second annual report on SIRC activities - 1991/92 (Suresh Chandvankar)

VOLUME 9 - JANUARY 1993

- Moujuddin Khan - Notes on Biography and Discography (Prof.S.R.Mehta)
- Glenn Miller Army Air Force Band and his records (E.F.Polic)
- Discography of Late Miss Gauharjan of Calcutta (Michael Kinnear)

VOLUME 10 - APRIL 1993

- Hindi Film songs composed by C.Ramchandra on video (Prakash Joshi)
- Records of old Marathi Bhavgeete (Prabhakar Datar)
- Records of unforgettable songs of forgotten composers (Prakash Kamat)
- The Record Collector - Mr.Mallappa Ankalgi,Solapur (Jayant Raleraskar)
- Biographical Note on Bal Gandharva (Suresh Chandvankar)
- Discography of Bal Gandharva (Michael Kinnear)
- Stamps on Records (Adam Miller)

VOLUME 11 - JULY 1993

- Gani Galyatali Gani Manatali (Moreshwar Patwardhan)
- Records of Multifaceted Ravi Shankar (K.R.Tembe)
- Records of Hindi Film Songs Composed by N.Dutta (Pradeep Acharya)
- 'Surshree Smt.Kesrabai Kerkar' (Prof.S.R.Mehta)
- Discography of Surshree Smt.Kesrabai Kerkar (Michael Kinnear)
- Reading Indian Record Labels - ' Sun Disc Record ' (Michael Kinnear)

VOLUME 12 - OCTOBER 1993

- 'Ustad Faiyazkhan' - A living legend in his life time (Prof.S.R.Mehta)
- Music recording in digital format (Mr.Sunil Dutta)
- Letters to the editor
- The record collector - Mr.Philip Yampolsky
- Third annual report on SIRC activities - 1992/93 (Suresh Chandvankar)

VOLUME 13 - JANUARY 1994

- Galaxy of musicians (Dr.Prakash Joshi)
- Record details - 'Shakuntal to Kulvadhu'(Prabhakar Datar)
- Discography of Moujuddin Khan (Michael Kinnear)
- Records wanted - Wants Lists
- Collector's items
- Book Reviews / Announcements

VOLUME 14 - APRIL 1994

- Discography of Jankibai of Allahabad (Michael Kinnear)

VOLUME 15 - JULY 1994

- Records of Mr.Sudheer Phadke - (Mr.K.R.Tembe)
- Records of the programme: 'Gani Manatali / Galyatali' (Mr.Moreshwar Patwardhan and Mr.Prabhakar Datar)
- 'Records of Mr.Datta Davjekar' - (Mr.Prabhakar Datar)
- Khan Saheb Abdul Karim Khan:Life,Gayaki and records : Lecture notes (Prof.S.R.Mehta)
- Collector's Items (Mr.Suresh Chandvankar)
- An appeal for the information on 'National Gramophone Company' (Mr.Michael S.Kinnear)
- Letters to the editor

VOLUME 16 - OCTOBER 1994

- Reading Indian Record Labels - Part 7 'Singer Record' and 'James Opera Record' (Michael Kinnear)
- In the Matter of Mahomed Hussain (Naginawale) (Michael Kinnear)
- Lecture notes on Pandit Omkarnath Thakur (Prof.S.R.Mehta)
- Fourth annual Report of SIRC (Suresh Chandvankar)

VOLUME 17 - JANUARY 1995

- Lecture notes on Great Thumri Exponent - 'Siddheshwari Devi' (Prof.S.R.Mehta)
- 'The Romance of Recording'-India-Articles I,II and III (William C.Gaisberg)
- Notes on the articles [I-III] - 'The Romance of Recording' (Michael Kinnear)

VOLUME 18 - APRIL 1995

- Lecture notes on Ustad Bade Ghulam Ali Khan:Life,Gayaki and records (Prof.S.R.Mehta)
- Notes on Late Mr.V.B.Alias Bapurao Pendharkar (Suresh Chandvankar)
- Discography of Late Mr.V.B.Alias Bapurao Pendharkar (Michael Kinnear)
- Letters to the Editor
- Collector's Items (Mr.S.K.Chatterjee)

VOLUME 19 - JULY 1995

- Rare record of Late Mr.Morarjibhai Desai
- Note on Pandit Ram Narayan (Suresh Chandvankar)
- Discography of Ustad Allaudin Khan (Michael Kinnear)
- Lecture notes on : Vilayat Hussein Khan (Prof.S.R.Mehta)
- Discography of Vilayat Hussein Khan (Michael Kinnear)
- Letters to the Editor

VOLUME 20 - OCTOBER 1995

- Reading Indian Record Labels - 'Ramagraph'
'The history of Ram-A-Phone and Ramagraph records'
(Michael Kinnear)
- The Rama-phone catalogue (September 1907) (Michael Kinnear)
- 'Bal Gandharva'-revisited (Michael Kinnear)
- Report on SIRC activities [July 1994-June 1995]
(Suresh Chandvankar)
- The Record Collector (Mr. Bill Dean Myatt)

VOLUME 21 - JANUARY 1996

- Note on Ramkrishnabuwa Vaze (Suresh Chandvankar)
- Discography of Ramkrishnabuwa Vaze (Michael Kinnear)
- SIRC news from Mumbai, Pune, Goa, Nanded and Solapur

VOLUME 22 - APRIL 1996

- Notes on Mehboobjan of Solapur (Jayant Raleraskar)
- Discography of Miss Mehboobjan of Solapur (Michael Kinnear)
- Letters to the Editor
- SIRC news from Mumbai and Pune

=====

SOCIETY OF INDIAN RECORD COLLECTORS (SIRC)
207 PARASHARA, TIFR HSG. COLONY, NAVYNAGAR, COLABA, BOMBAY-400 005.

[Established : 1990]

The Society of Indian Record Collectors intends to bring together all persons, Institutions interested in -

" PRESERVATION, PROMOTION AND RESEARCH "

in all aspects of Indian musical culture. It intends to -

* Bring together all music lovers for social communication by way of listening to the recorded music.

** Publish a quarterly journal - "THE RECORD NEWS" - in which research articles, reviews, notices, reports, new releases small advertisements, etc. will be published.

*** Freely disseminate information between the members of the society about the collectors of old records, their collections with an emphasis on the preservation of old records and recordings.